तेज पाक्षिक, मनोरंजन टैक्स १.५० रुपये
अंक : २० वर्ष : १८ अक्तूबर १९८२
दीवाना
हैल्लो
यह दशहरा अंक है
श्री रावण

राजाजी

अब मंत्रियों को पता लगेगा कि राजा भी कोई चीज है ।

सुना है अमरीका में साइंस ने बड़ी तरक्की की है। मैंने वहां से गुप्त रूप से विशेषज्ञ बुलाया है । वह मेरे कद बढ़ाने का कोई न कोई तरीका निकाल ही लेगा । मंत्रीगण फिर मुझे मोटू राजा कह कर तो देखें ।

योर हाईनेंस, घबराने की बात नहीं है अंकल सैम कोई न कोई तरीका ढूंढ़ लेगा । अमरीका कोकाकोला बना सकता है तो कद नहीं बढ़ा सकता ?

आ गया दिमाग में फोर्ड १९६० मॉडल आइडिया ! आपको दबा भी नहीं खानी पड़ेगी । हम आपका पहरावा ऐसे बना देंगे कि डेढ़ फुट कद बढ़ जाएगा ।
बेरी गुड सैम, लट अस सी ।

बस जूतों और मुकुट का डियाजन बदल दिया । स्पेशल ऊंची ऐड़ी वाले जूते और ऊंचाई का आभास देने वाला मुकुट ।

आप जरा इन्हें पहन कर शीशे के सामेन खड़े हो जायें तो अंकल सैम की अक्ल की दाद देंगे ।
आदाब अर्ज है योर हाई-नैंस सारी प्रजा हैरान रह जाएगी ।
तुम्हें मुंह माँगा इनाम दूंगा ।

सबकी आंखें खुली की खुली रह गयीं ।

हुजूर गजब हो गया । राज्य में बगावत की आग भड़क उठी है । बागियों न अफवाह उड़ा दी है कि राजा की खोपड़ी पर पत्थर पड़ गए हैं, इन पत्थरों को ढकने के लिए वह ऊंचा मुकुट पहनता है । दिमाग चढ़ने के कारण पैर जमीन पर नहीं पड़ते । इसीलिए पैरों की ऊंचाई बढ़ गई है ।
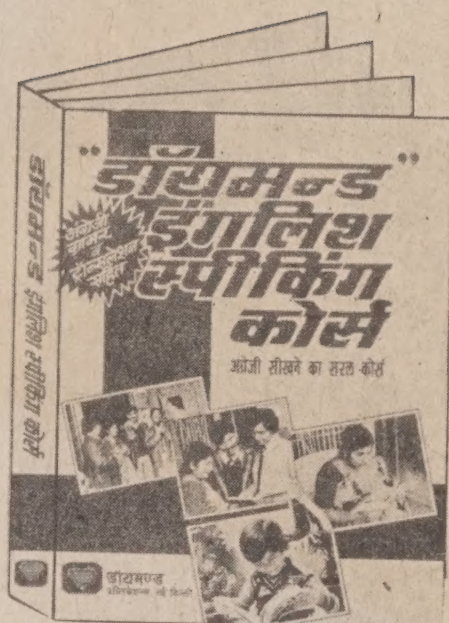
विज्ञापन कांग्रेस ८२

हाल में ही दिल्ली में विश्व विज्ञापन कांग्रेस का आयोजन हुआ। आज विज्ञापनों का बहुत महत्व है। हमारे दिल में विचार उत्पन्न हुआ कि पुराने जमाने में भी विशेषकर देवकाल में विज्ञापनों का प्रचलन होता तो कैसे विज्ञापन देखने को मिलते ··

सावधान ! सावधान !

नक्कालों से सावधान

पता लगा है कि कुछ लड़के मोर पंख लगा कर मधुबन में बांसुरी बजा कर कृष्ण के भेष में गोपियों को मूर्ख बना रहे हैं। असली कृष्ण और बांसुरी की तान केवल नन्द व यशोदा के पुत्र मुरलीधर हैं। नक्कालों से सावधान रहिए। बांसुरी की तान पर आई. एस. आई. मार्क देखकर ही रीझें। गोपियों से निवेदन है कि वे अपनी मटकियां असली कृष्ण छाप पत्थरों से ही फुड़वायें।

'तीनों लोकों में बगैर टिकट घूमते रहने वाले प्रसिद्ध नारद जी कहते हैं—अगर मेरे पास भी ऐसा ही ऊ फोम का गद्दा होता तो आराम से लेटा रहता। तीनों लोकों में मारा-मारा न फिरता।'
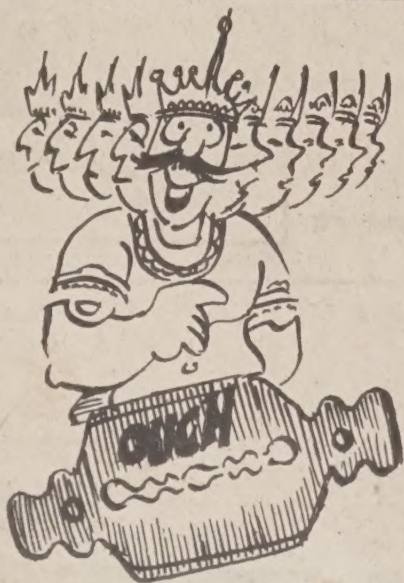
अऊच ब्लेड सर्वोत्तम है

"मैं अऊच ब्लेड का ही प्रयोग करता हूं। एक ब्लेड मेरे सारे मुंहों की शेव मखमल जैसी मुलायमी से करता है। मेरी राक्षसी शान का यही रखवाला है।"

सुनहरी मौका !

सबसे जल्दी प्रसन्न होने वाले भोलेनाथ की तपस्या करें, और देवताओं के चक्कर में पड़ कर अपना कीमती समय बर्बाद न करें।

अब तपस्या करने वालों के लिए विशेष आकर्षण···
तपस्या एक साथ करने की जरूरत नहीं। आप आसान किश्तों पर तपस्या कर सकते हैं।

आपका भविष्य

पं. कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञभूषण पं. हंसराज शर्मा

मेष : नई योजना पर विचार-विमर्श, आय-व्यय समान, कारोबार की हालत ठीक होगी और लाभ भी समय पर मिलता रहेगा, नई वस्तुओं की खरीद, विशेष व्यय होगा।

वृष : यात्रा में सुख, आय यथार्थ, हालात ठीक चलेंगे, आर्थिक दशा नियन्त्रण अधीन लेकिन धन की कमी महसूस होती रहेगी, कुछ समस्यायें सुलझेंगी, लाभ खर्च समान, मित्र साथ देंगे।

मिथुन : रुकावट और परेशानी का सामना, लाभ खर्च बराबर, यात्रा सफल, कुछेक परेशानियों के बावजूद भी हालात आपके वश में रहेंगे, कारोबार सुधरेगा, लाभ अच्छा, व्यय यथार्थ होगा।

कर्क : लाभ यथार्थ, व्यय काफी होगा, कामों में व्यस्तता बढ़ेगी, स्वभाव में गुस्सा बिना कारण ही रहेगा, यात्रा न करें, कारोबार अच्छा लेकिन लाभ भी पूरा न मिल पाएगा।

सिंह : मिश्रित फल प्राप्त होंगे, शत्रु एवं झगड़े आदि से बचें, लाभ बढ़ेगा, किसी खास उलझन से छुटकारा पायेंगे, व्यय यथार्थ, विरोधी मुंह की खायेंगे, कारोबार से लाभ अच्छा होगा।

कन्या : हालात में कुछ सुधार होगा, परिवार में सुख, व्यर्थ की समस्याओं से घबराहट, व्यय बढ़ेगा, नई वस्तुओं की खरीद, यात्रा सावधानी से करें, मान बना रहेगा।

तुला : यात्रा पर न जायें, परेशानी बिना कारण ही रहेगी, सेहत बिगड़ेगी, कामकाज की हालत सुधरेगी, आर्थिक लाभ भी अच्छा होगा, परिश्रम अधिक, यात्रा सफल रहेगी।

वृश्चिक : यात्रा अचानक, कोई खास खबर मिलेगी, व्यय बढ़ेगा, नातेदारों से कुछ चिन्ता, खर्च पर नियंत्रण बनायें वर्ना तंग से पेश आएगी, कारोबार पहले जैसा ही, झगड़े आदि से बचें।

धनु : मनोरंजन एवं नई वस्तुओं की खरीद पर विशेष व्यय, समय अच्छा गुजरेगा, परिश्रम से सफलता, कठिन काम भी सुगमता से बन जायेंगे, यात्रा में सुख, खर्च बढ़ेगा।

मकर : हालात कुछ सुधरने लगेंगे, कारोबार ठीक चल पड़ेगा, कोई खास खबर मिलेगी, खर्चा भी ज्यादा होगा, यात्रा हो सकती है, कामों में सफलता कुछ देर से मिलेगी, यात्रा सफल रहेगी।

कुम्भ : लाभ खर्च में समानता रहेगी, यात्रा सावधानी से करें, हालात ठीक होंगे और कारोबार की हालत भी सुधरती जाएगी, नातेदारों से मेल-जोल, परिश्रम सफल होगा।

मीन : सफलता देर से या आशा से कम, संघर्ष काफी आयेंगे, आय में वृद्धि, व्यर्थ के झंझटों से मन परेशान, व्यय बढ़ेगा, यात्रा पर जाना ठीक नहीं, दोस्त साथ देंगे, कारोबार यथापूर्व ही चलेगा।

अंक नं० 16 मिला, पढ़कर इतना मजा आया कि शब्दों में बयान नहीं कर सकता। आपकी पूर्व घोषणा अनुसार इस अंक में पूरा मसाला था। मोटू-पतलू नहीं थे फिर भी उनकी कमी महसूस नहीं हुई। कुल मिलाकर यह अंक पूर्ण रूप से आजाद अंक था।

एन० एस० भाटिया—स्टेशन

दीवाना का अगस्त अंक काफी बेताबी से इन्तजार के बाद मिला, व्यंग्य 'तलाश एक कुर्सी की' फैण्टम, लल्लू 'सिलबिल पिलपिल' बड़े मजेदार लगे, चुटकले भी पसन्द आये।

अमन नैथानी, घनश्याम कपाड़िया कोटद्वार गढ़वाल

स्वतंत्रा दिवस मनाने के लगभग 40 दिन बाद आपका अंक नं० 16 प्राप्त हुआ। सभी फीचर एक से बढ़कर एक थे। सबसे ज्यादा हंसाया तो 'राष्ट्र के नाम संदेश' ने। ऐसा दिमागी फीचर कोई-कोई ही दे सकता है। सचमुच यह एक स्वतंत्र अंक था। अगले अंक के इन्तजार में लाखों शुभ कामनाओं सहित।

नरेन्द्र राजीव—गोविन्द नगर, कानपुर

अंक 16 देखने का सौभाग्य मिला। मुख पृष्ठ व क्रिकेट दीवाने पर आपने हास्य व यथार्थ सत्य छापा है। उसके लिये बधाई, गरीबचन्द की डाक, फिल्मी पैरोडी सब रोचक व हास्य पूर्ण हैं।

दीवाना में जरूरत है। आज देश में बढ़ती अशांति व आराजकता पर व्यंग्य पूर्ण चित्रों द्वारा सब पाठकों के सामने आज के समाज की छाया को लाया जाय : भ्रष्टाचार रूपी दानव का व्यंग्य चित्र बनाया जाय : दहेज प्रथा पर अंक निकाला जाय; बाकी सभी रोचक सामग्री के लिए बधाई।

श्याम गागनानी, मुर्तिजापुर—अकोला

दीवाना का अंक 16 (15 से 31 अगस्त) मिला, फीचर 'आजादी का कचुमर', आजादी कैसी-कैसी, फिल्म पैरोडी 'हीरों का चोरी' पसन्द आई। व्यंग्य कथा व हास्य कथा, लल्लू और सिलबिल पिलपिल अच्छे थे। मोटू-पतलू को न पाकर निराशा हुई। मोटू पतलू तो दीवाना का गौरव है।

कृष्ण बुआ, प्रेम नगर—जोन्ह

दीवाना अंक 16 बड़े ही चाव से पढ़ा, बेहद पसन्द आया। चना कुरमुरा, शमशान की छुट्टी व हास्य कथा गनपति बाबा के दूत तो दो-दो बार पढ़ीं, व्यंग्य तलाक [illegible] र्सी का व जूली डिसूजा काम की तलाश में भी पसन्द आयी।

अच्छी पत्रिका के लिए बधाई!

अशोक मारकन्डे—राजेन्द्र नगर दिल्ली-6

पिछले कुछ समय से दीवाना किन्हीं कारणोंवश देर से छपकर आपको देर से मिलता रहा है। इससे आपको जो असुविधा हुई, हमें उसका खेद है। भविष्य में ऐसी असुविधा फिर न हो इसलिए दीवाना का अंक 19 व 20 एक ही साथ छापकर। दीवाना को आगामी अंक से समय पर पहुंचाया जा रहा है।

—सं०

मुख पृष्ठ पर

बड़ी मुश्किल में आन पड़े जब
दो दो घंटियां बजने लगीं
किसका फोन और किसे सुनाऊं
अधर में लटकी जान पड़ी।
बस पूछेंगे एक बात हमेशा
कब बजेगा तुम्हारा डंका?
कब निकलेगा अंक दशहरा?
कब जाओगे वापिस लंका?

दीवाना

अंक : 19-20 वर्ष : 18 अक्तूबर 1982

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता
दीवाना तेज पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	२७ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१४ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

एक अनोखा संगम

—आजाद रामपुरी

अपने स्वभाव के बिल्कुल विपरीत घोर अमावस की अंधेरी जगमग होते हुये पूर्णिमा के चांद की तरह आज वे बड़े प्रसन्न थे—ठीक ऐसे जैसे कोई नेता करोड़ों के घपले करने के बाद जांच आयोग द्वारा दोषी न पाये जाने पर प्रसन्नता का अनुभव करता हो। वे अपने आफिस की टेबल पर यों महक रहे थे जैसे पतझड़ के बाद बसंत ऋतु आने पर टेसू के फूल खिले हों। उनकी खुशी के मारे बाछें खिली हुई थीं—उनका रोम-रोम पुलकायमान हो रहा था—मानो तो किसी फिल्मी नायिका ने उनकी ओर चपल नयनों से देखा हो। सच पूछो तो उन्हें अपने नाटकीय जीवन में स्वर्ग की एक किरण की झलक मिल गई थी। वे आफिस में आये और अपने चेम्बर में प्रवेश करते ही द्वार से टेबल तक अपनी बरबस फूटती हुई मुस्कान की लड़ियां बिखेरते हुये चले गये। ठीक ऐसे जैसे दौरे पर निकले किसी मंत्री की कार धूल उड़ाती हुई चली गई हो। कुर्सी के पास पहुंचते ही उन्हें एक अलौकिक आनन्द की ऐसी तीव्र अनुभूति हुई कि वे परमानन्द के रंग से पूरी तरह सराबोर हो अपनी एक तीन लोक से मथुरा न्यारी की भांति रसामृत की सरिता में डूब-डूब कर गोता लगाने लगे। वे कुर्सी पर धमाक ऐसे जा जमे जैसे ही फिल्मी हीरोइन के थिर-थिर थिरकती संगमरमी कंचन काया के लावण्य की गंध पाकर कोई खलनायक बलात ही आ टपकता है। कुर्सी पर बैठते ही उन्होंने लम्बी नाक के अग्रभाग पर खिसककर आये चश्मे को बलिष्ठ दोनों भुजाओं की मजबूत उंगलियों की पकड़ में कसकर उसे ऊपर यों ले गये जैसे कोई नेता अपने मंत्री बनते ही सारी सुख-सुविधाओं को अपनी ओर खींच ले जाता है। उन्होंने चश्मे को सही जगह यों जमा कर जैसे कि किसी नेता ने अपने चमचों को उचित पदों पर बिठाया हो वे टुकुर-टुकुर ऐसे झांकने लगे जैसे उन्होंने चश्मा नहीं किसी बिगड़ेल बाबू को सही किया हो। पतझड़ में ठूंठ पेड़ के समान अपने खुर्राट अफसर को मुस्कानों की हरीतिमा से लदा देखकर अधीनस्थ बाबू परस्पर खुसुर-पुसुर करने लगे। एक-दूसरे की पीठ को थपथपाते हुये मुंह बिचका कर कहने लगा—

'यार आज तो सूर्य पश्चिम दिशा की ओर से उदित हो रहा है।'

'सो तो है' उसने नेता की हां में हां जैसे चमचा मिलता है वैसे ही दूसरे बाबू ने उसकी बात पर सिक्का ठोक दिया।

लेकिन यार, बड़ा कमाल हो गया।'

पहले ने बात ऐसे उछाल कर दे मारी जैसे फिल्मी खलनायक हीरो के डुप्लीकेट को धरती पर पटकनी देकर दर्शकों के आगे उछाल देता है।

'वरना पहले तो' बात और आगे बढ़ाते हुये शिगूफा छोड़ने लगा—'अफसर की हँसी को बिच्छू का डंक मार जाता था। हम बॉस को गुदगुदी मचाने की कोशिश भी करते बॉस भी नजरें नीची करके फाइलों को सूंघने लगता और जब हम अपने काम में फाइलों को कुरेदते तो ये महाशय हमारी ओर ऐसे घूर-घूर कर देखते थे जैसे कि कोई हिंसक शेर, बकरियों को हड़प कर जाने के लिए जीभ लप-लपा रहा हो।'

'तुमने भी यार क्या पते की बात कही है?'

दूसरे बाबू ने पहले वाले बाबू की उंगली पकड़कर जोर से मसक कर बड़ी मुस्तैदी के साथ मसल दी। उंगली के मसले जाने से पहले वाले बाबू के मुख से दर्द के मारे 'हाय-राम' की चीख फूट पड़ी। इधर बाबू की चीख फूटना था उधर दरवाजे से कार्यालय में नई नियुक्त हुई अल्हड़ युवती स्टेनो का मन्द-मन्द मुस्कराते हुये चेम्बर में प्रवेश करना हुआ। अफसर को यह समझते देर नहीं लगी कि बाबू की 'हाय राम की चीख' चीख न होकर अल्हड़ स्टेनो पर ट्रांट कसना है। उनका पारा गर्म हुआ। क्रोध से चेहरा लाल होकर तमतमाने लगा। अभी तक जिस चेहरे पर मुस्कराहट का साम्राज्य था वहां अब गुस्से के लाल अंगारे धधक रहे थे। सारे वातावरण में तनाव की ज्वाला प्रज्वलित हो गई। क्रोध के मारे आग बबूला हुये अफसर अपनी कुर्सी के बजाय एकदम टेबल पर अटेंशन की हालत में खड़े होकर अपने अधीनस्थ बाबूओं के ऊपर गुर्राते हुये अपनी कर्कश वाणी के तमंचे के छर्रे छोड़ने लगे—

'क्या बदतमीजी है ये? तुम में इन्सानियत नाम की कोई चीज नहीं है?' आफिस की गरिमा को धूल में मिला रहे हो। और न जाने वे क्या-क्या बक-बक करते चले गये। और इधर ये आलम था तो उधर भी कम रोचक—माजरा नहीं था। जब अधीनस्थ बाबूओं ने अफसर को खड़े होते हुये देखा तो व भी उनके देखा-देखी यों सोचकर खड़े हो गये कि शायद किसी वरिष्ठ अधिकारी का 'राउण्ड' हो रहा है। स्थिति यहां तक रह जाती तब भी गनीमत थी। किन्तु होना ही कुछ और था। बाबुओं का हड़बड़ाहट में खड़ा होना था कि उधर से स्टेनो साहिबा का भी उनकी टेबल के पास पहुंचना हुआ। बाबुओं की हड़बड़ाहट के कारण उनकी टेबलें उलटी होकर जमीन पर पड़ी थीं और स्टेनों साहिबा एक उलटी पड़ी टेबल पर खड़ी होकर अपने को आफिस के कटघरे में पा रही थीं। इधर अफसर टेबल पर थे ही। उधर बाबू गण अपने किये पर पश्चाताप की मुद्रा में नीची नजरें किये हुये गुम-शुम खड़े हुये सारे हालातों पर मन ही मन मिसरी सी घोलकर मन्द-मन्द मुस्करा रहे थे। ●

प्रेमचंद की कहानी "सवा सेर गेहूं" का नायक शंकर साधू सत्कार के लिए एक विप्र से सवा सेर गेहूं उधार लेता है। विप्र को हर-छमाही खलिहानी में कुछ फालतू अनाज डालकर भी वह हिसाब में नहीं गिनता। विप्र महाजन बन जाता और भूले भुलाए सवा सेर गेहूं की कीमत सूद-दर-सूद 60 रुपये वसूल लेता है। इसके बावजूद शंकर पर 120 रुपए कर्ज निकलता है। सारी उम्र विप्र की गुलामी करने पर भी शंकर कर्जदार ही मरता है। प्रेमचंद ने कहा था यह एक सच्ची कहानी है।

- ऐसे ही बदनसीबों की मुक्ति के लिए 1976 में कानून बनाया गया। इन बंधुआ मज़दूरों को साहूकारों के चंगुल से छुड़ाने से ही बात खत्म नहीं हो जाती; उन्हें नया काम भी मिलना चाहिए।
- 1980-81 में एक लाख 22 हजार बंधुआ मज़दूरों में से एक लाख 9 हज़ार को नया काम दिया गया।
- इसके साथ ही गांव के दूसरे बेरोजगार लोगों के लिए पशुपालन, मुर्गीपालन, मछलीपालन और सिल्क उद्योग आदि को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। छठी योजना में ऐसे लोगों के कल्याण पर 3000 करोड़ रुपए खर्च किए जायेंगे।

गरीबी पर हर दिशा में वार किया जाए तभी आर्थिक समता का स्वप्न पूरा होगा

- इसी तरह गांवों के भूमिहीन मज़दूरों के हितों की रक्षा के लिए भी मज़दूरी की कम-से-कम दरें तय कर दी गई हैं। दरें समय-समय पर बढ़ती रहेंगी।

विस्तृत जानकारी के लिए कूपन का प्रयोग करें:—

उपनिदेशक
मास मेलिंग यूनिट,
विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय,
बी ब्लाक, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली-110001.

नये 20-सूत्री कार्यक्रम के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए कृपया मुझे हिन्दी/अंग्रेजी की पुस्तिका भेजें।

नाम ____________________

पता ____________________

____________ पिन ____________

नया 20 सूत्री कार्यक्रम

davp 82/302

व्यंग्य

लक्ष्मी जी की प्रेस कांफ्रेंस

—संजय कुमार श्रीवास्तव 'सरल'

'लक्ष्मी जी ने प्रेस-कांफ्रेंस बुलायी। लक्ष्मी जी ने प्रेस-कांफ्रेंस बुलायी।' यह शोर सारे स्वर्ग लोक में फैल गया! यह पहला मौका था, जबकि लक्ष्मी जी ने प्रेस-कांफ्रेंस बुलायी थी। प्रेस-कांफ्रेंस बुलाने का मुख्य कारण था धन के बंटवारे का मामला!

लक्ष्मी जी ने देखा कि गरीबों की गरीबी निरन्तर बढ़ती जा रही है तथा अमीरों की अमीरी दिन दूनी रात चौगुनी फूल-फल रही है। महंगाई ने गरीबों तथा मध्यम वर्ग के लोगों की कमर तोड़ दी है। इसलिए बहुत सोच-समझकर लक्ष्मी जी ने प्रेस-कांफ्रेंस बुलायी थी।

प्रेस-कांफ्रेंस में सभी अखबारों के प्रतिनिधियों को आमन्त्रित किया गया था। किन्तु अधिकांश अखबारों ने इसे कोई महत्व न दिया। इस कांफ्रेंस में दावत का तो कोई प्रबन्ध था ही नहीं, इसलिए वहां आता भी भला कौन?

फिर भी प्रेस-कांफ्रेंस में कुछ पत्रकार तो आ ही गये! नियत समय पर लक्ष्मी जी अपनी सीट पर से उठीं। माइक को अपने मुंह के पास ले जाकर वे बोलीं, 'मैं आने वाले दीपावली पर्व के लिए आप सबको बधाई देती हूं और आपकी समृद्धि की निरन्तर कामना करती हूं!'

तभी उपस्थित लोगों में से जैसे किसी ने बम फोड़ दिया, 'आप अपनी बधाई और हमारे लिये सुख-समृद्धि की कामनायें अपने पास ही रखिये! हम दिनो-दिन महंगाई के बोझ से दबे जा रहे हैं! आपकी पूजा के लिए मिट्टी की बनी मूर्तियां भी इतनी महंगी मिल रही हैं कि हम खरीदने में असमर्थ हैं। चीनी का संकट आपको मालूम ही है। इसलिए मिठाई चढ़ाना भी इस बार असंभव दिखाई दे रहा है।'

आक्रोश भरे इस स्वर से लक्ष्मी जी का सहम जाना स्वाभाविक था। फिर भी उन्होंने स्थिति को संभालते हुए कहा, 'मैं आप लोगों की परेशानियों को समझ रही हूं। मैंने आप लोगों को इसलिये बुलाया है।'

'लिटिल टाइम्स' के संवाददाता आगे आये, 'क्या आपका जन्म सचमुच ही समुद्र से हुआ है?'

'लोग कहते तो यही हैं कि देवताओं और राक्षसों ने मिल कर समुद्र मंथन किया था। उसमें से कुल चौदह रत्न निकले थे। उन्हीं में से एक रत्न मुझे भी कहते हैं। लक्ष्मी जी ने बात साफ करते हुए कहा।

'हमने सुना है कि आपकी सवारी उल्लू है। यह बताइये कि आपने सारे पक्षियों में से इसे ही क्यों चुना?' एक अन्य पत्रकार ने प्रश्न किया।

'हुआ यह कि मैंने दैनिक पत्र 'स्वर्ग-लोक टाइम्स' में एक विज्ञापन छपवाया था—जरूरत है एक ऐसे पक्षी की, जो सवारी के योग्य हो, चालाक हो किन्तु थोड़ा मूर्ख भी हो। खतरनाक हो, हमला करने में निपुण हो, अंधेरे और उजाले में चलने का अभ्यस्त हो और शरीर से बलवान हो। इस विज्ञापन को सुनकर कई पक्षी आये, किन्तु उन सबमें सब प्रकार से उल्लू ही मुझे उपयुक्त लगा।

'लेकिन उल्लू को तो दिन में दिखाई ही नहीं देता।' दैनिक पत्र 'जागरण' के संवाददाता ने टोका।

'हां, इसका भी एक कारण है। वैसे उल्लू को पहले दिन में भी दिखाई देता था, लेकिन जैसे ही यह मेरे पास आया, धन की चकाचौंध ने इसे अंधा बना दिया। अब यह सिर्फ रात में ही देख सकता है। मेरे वाहन उल्लू को धन का घमण्ड हो गया था, इसलिये पक्षी समाज में उसकी कोई इज्जत नहीं रह गई।

लोग तो अब इसके नाम का प्रयोग एक-दूसरे को गाली देने में करने लगे हैं।' लक्ष्मी जी ने कारण स्पष्ट करते हुए कहा।'

'आपका बैंक बैलेंस कितना है?' मासिक पत्रिका 'गुब्बारा' के सम्पादक ने प्रश्न किया।

लक्ष्मी जी सिटपिटा गईं। बोलीं, 'ठीक से याद नहीं है। दरअसल अपनी पास बुक मैं घर पर ही भूल आई हूं।'

'आपने अपना 'बीमा' करवा लिया है कि नहीं?' जीवन बीमा निगम के एक नये एजेन्ट ने प्रश्न किया।

'अभी तो नहीं कराया है, मगर ज्यादा कमीशन देने वाला कोई एजेंट मिल गया तो जरूर करवा लूंगी'

इसी बीच महिलाओं की मासिक पत्रिका 'महिला समाज' की सम्पादिका सामने आ गईं, वे बोलीं, 'क्या आपके यहां भी पंद्रह तारीख के बाद राशन की

कमी आ जाती है ?'

'देखिये, मुझे फिजूल खर्ची पसंद नहीं है। मैं तो थोड़े में ही गुजारा कर लेती हूं।' लक्ष्मी जी ने सिटपिटाते हुये उत्तर दिया।

'सुना है कि सरस्वती जी से आपकी नहीं पटती।'

'देखिये, ऐसी कोई बात नहीं है। अभी पिछले दिनों एक पार्टी में हम दोनों की मुलाकातें हुई थीं।' लक्ष्मी जी ने स्थिति को संभालते हुए कहा।

'एक प्रश्न और। क्या आपको भी कभी पैसों की कमी सताती है ? मेरा मतलब कि क्या आप भी किसी से उधार लेती हैं ?

'देखिये, ये मेरा 'प्राइवेट मामला' है। मैं इस प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ हूं।' लक्ष्मी जी ने अपने चेहरे पर आया पसीना पोंछते हुए उत्तर दिया।

लक्ष्मी जी बहुत थक गई थीं इसलिये कांफ्रेंस समाप्त करने की घोषणा करके वे जैसे ही उठने लगीं, वहां खाकी वर्दी पहने एक आदमी आ गया। सतर्क निगाहों से चारों ओर देखते हुए उसने अपनी जेब से एक फोटो निकाली और सब पर नजर डालता हुआ वह लक्ष्मी के पास जा पहुंचा।

'क्या आप वही लक्ष्मी जी हैं, जिनका पता है—लक्ष्मी नारायण सदन, कुबेर मार्ग, बैकुंठपुरी।' उस व्यक्ति ने लक्ष्मी जी पूछा।

'जी हां, क्या बात है ?' लक्ष्मी जी ने घबरा कर पूछा।

'जी, मैं इंकमटैक्स विभाग का नोटिस आपके नाम लाया हूं। आपने तीन-चार महीने से 'इंकमटैक्स विभाग' का बिल नहीं जमा किया।' उसने कहा।

सभा में गड़बड़ मच गई। पत्रकारों और संवाददाताओं ने उस व्यक्ति को घेर लिया। वे उससे तरह-तरह के प्रश्न करने लगे। वह बेचारा चिल्ला रहा था, 'मुझे नोटिस पर सिग्नेचर तो करा लेने दो।' मगर लोग थे कि नोटिस पढ़ने और जायदाद का ब्यौरा जानने के लिये उत्सुक थे। लोग एक के ऊपर एक बढ़े जा रहे थे।

इसी गड़बड़ी में लक्ष्मी जी कब और कहां गायब हो गईं, किसी को इसका पता ही नहीं चल पाया। लक्ष्मी जी 'इंकमटैक्स-विभाग' के उस आदमी को धोखा देकर फरार होने में सफल हो गईं। सब लोग एक-दूसरे का मुंह ताकते ही रह और लक्ष्मी जी अंतर्ध्यान हो गईं। ●

सिलबिल पिलपिल
कलर टी.वी.
थमने ग्राजकल ग्रखबारों में रंगीन टी. वी. के कितने विज्ञापन ग्रा रहे हैं। हर कम्पनी रंगीन टी. वी. बना रही है। जापान ग्रौर कोरिया से सैट पर सैट मंगाये जा रहे हैं। एशियाई खेल तो सारे रंगीन ही टैलेकास्ट होंगे।
ग्ररे म्हारे पास तो ग्रपना ब्लैक एण्ड व्हाइट टी. वी. है। हम तो उसी पर प्रोग्राम देखेंगे। हमें रंगीन टी. वी. से क्या लेना है। जंगल के मोर से घर की काली मुर्गी ग्रच्छी जो ग्रंडे देती है।
थम दोनों को क्या हो गया है? थमारी ग्रक्ल की भैंस ब्लैक एन्ड व्हाइट पार्क में घास चरने चली गयी है। गौरमींट ने इतना पैसा खर्च करके ग्रमरीका, जापान में टी. वी. कार्यक्रम रंगीन प्रसारित करने वाली मशीनें मंगाई हैं ग्रौर थम दोनों यह फटीचर टी. वी. लेकर बैठे रहोगे? दूरदर्शन वाले देसी घी के परांठे दिखायेंगे तुम्हारे ब्लैक एंड व्हाइट टी. वी. पर वह बनस्पति घी में बने दिखाई देंगे। स्टूडियो से प्रोग्रामों की दुल्हन रंगीन लाल जोड़ा पहनकर ग्रायेगी लेकिन तुम्हारे डब्बे में उसका बदरंग रिसेप्शन होगा।
ग्राज देश में रंगीन क्रांति वाली है। थम दोनों को रंगीन का संदेश हरयाणा के रोहतक ग्रौर गुड़गांव जिले के घर-घर तक पहुंचाना है।
ग्रौर यह सब तभी संभव है जब थम रंगीन टी० वी० खरीद कर लाग्रोगे। दुनिया को पता लगेगा ग्रभी थमारा खून लाल है सफेद नहीं हुग्रा।
ब्लैक एंड व्हाइट टी० वी० ग्राज के प्रगतिशील युग के घर में धब्बनुमा दाग है इसको हथौड़े से तोड़कर चकनाचूर करना होगा। इन्कलाब जिन्दाबाद!
ग्रगर थम रंगीन टी० वी० नहीं खरीदोगे तो बोत बुरा होगा। थमारे रंगीन टी० वी० लेने की बात गाम में पहुंचेगी तो रिश्तेदारों पर रौब पड़ेगा। उनको भी पता लगेगा कि थमने बारह साल दिल्ली में डी. टी. सी. बसों की उड़ाई धूल ही नहीं फांकी है ग्रौर कुछ भी किया है।
चूहे की बात में वजन तो है। सादे टी. वी. तो ग्राजकल गाम में भी हैं। गांव वालों ग्रौर शहर वालों में ग्रब रंगीन ग्रौर सादे टी. वी. का फर्क ही तो होगा।
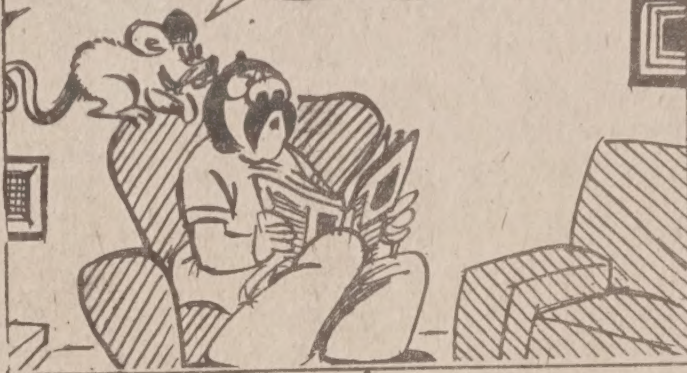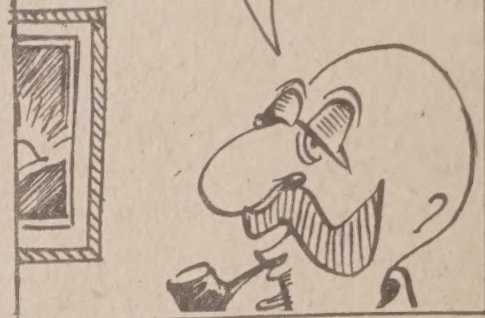
अगर ऐसा है तो ठीक है हम अभी जाकर रंगीन टी० वी० ले आते हैं··· हरयाणे में म्हारी धूम मच जायेगी। हू हू··

यह आकाशवाणी का रोहतक केन्द्र है। अब एक ज़रूरी सूचना सुनिये। अभी अभी खबर मिली है कि हरयाणे के मशहूर सपूत पिलपिल और सिलबिल ने रंगीन टी० वी० खरीद लिया है। आकाशवाणी रोहतक उनके टी० वी० घर ले जाने का आंखों देखा हाल सीधा प्रसारित करेगा।

भाई जी आजकल ठगी बोत हो रही है हमको कलर टी० वी० लेना है तो होशियारी से काम लेना होगा। हर चीज में मिलावट हो रही है। टी० वी० के सर्कट कंडेसरों में पानी न मिला रखा हो।
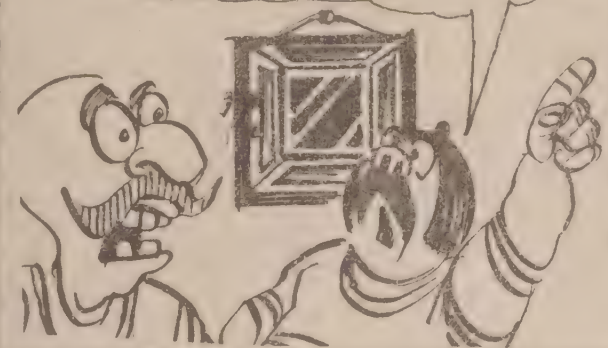
हम कम्पनी वालों से इश्टाम्प पेपर पर पांच साल की स्टेनलैस स्टील के तरह की पक्की गारंटी लेंगे। अगर गारन्टी से पहले खराब हो गया तो हम नाक में दम कर देंगे। अपने सारे गाम वालों और डंगरों को लेकर दुकान पर पहुंच जायेंगे।
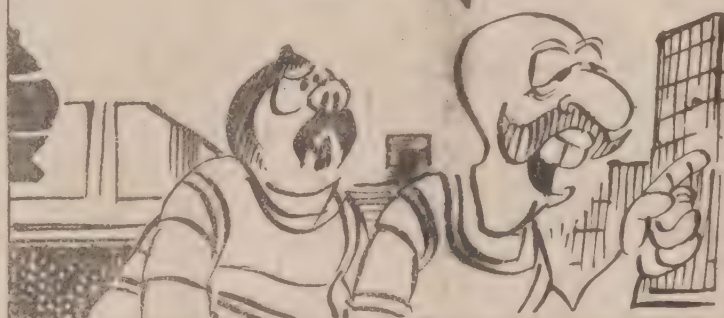
इस समय आप रोहतक रेडियो स्टेशन से सिलबिल पिलपिल का रंगीन टी. वी. खरीदने का आंखों देखा हाल अंग्रेजी और हिन्दी में सुन रहे हैं। अंग्रेजी में हमारे कमेंटेटर मैल वेल डी मेलो हैं और हिन्दी में जसदेव सिंह। मैं जसदेव सिंह लाजपत नगर मार्केट से बोल रहा हूं। इस वक्त दोनों टी. वी. खरीद कर सड़क पर आ गये हैं बड़ा ही मनोरंजन दृश्य है। दोनों के चेहरे इस शुभ अवसर पर दमक रहे हैं। सड़क के दोनों ओर अपार जनसमूह दोनों के स्वागत में हर्षनाद कर रहा है। आकाश से भारतीय वायुसेना का एक हैलीकाप्टर फूलों की वर्षा कर रहा है······
RAINBOW
COLOUR
TV

याड़ी गरीबचंद तू कितना अक्लमंद है। भाभी का भेष धर कर पूजा की थाली लेकर घर के दरवाजे पर नए कलर टी. वी. की आरती उतारने के लिये खड़ा है। तेरे बाल-बच्चे जुग-जुग जीयें।

भाई जी, देखो इसके कैबिनेट पर कैसी पालिश है। आंखें चुंधिया जाती हैं। मालिश करने के बाद म्हारी गंजी खोपड़ी भी इतनी नहीं चमकती होगी। और इसके बल्ब तो ऐसे हैं जैसे रात को बिल्ली की आंखें चमकती हैं।
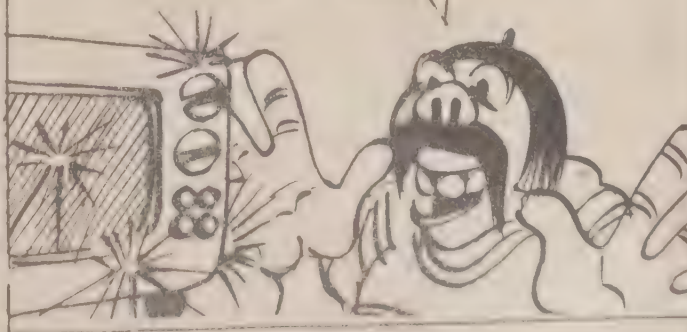
अभी कलर ट्रांसमिशन आ रहा होगा। लगाकर देखो कैसा है ?

खबरदार जो म्हारे रंगीन टी. वी. को हाथ लगाया। नमकहराम कहीं का। इतने महंगे टी. वी. को चलाकर खराब करना चाहता है ? पता है हमारे इस पर कितने रुपये खर्च हुये हैं। पूरे दस हजार खर्च किये हैं, तेरे बाप ने भी कभी देखे थे इतने रुपये ?

हाथ तोड़ दे इसका।

हम तो किसी को हाथ भी नहीं लगाने देंगे इसको। हाथ लगाने से बटन मैले हो जायेंगे, स्क्रीन गंदा हो जायेगा। यह तो हमने अपनी मशहूरी के लिये खरीदा है। यह गंदा चूहा इसको चलाना चाहता है।

हम मशीनगन लेकर दिन-रात इसके चारों तरफ पहरा देंगे।

ऐह ! टी. वी. गाइड बुक में इसके इस्तेमाल के बारे में हिदायतें दे रखी हैं। कहता है टी. वी. को गर्म जगह पर मत रखो। सैट को नुकसान हो सकता है।
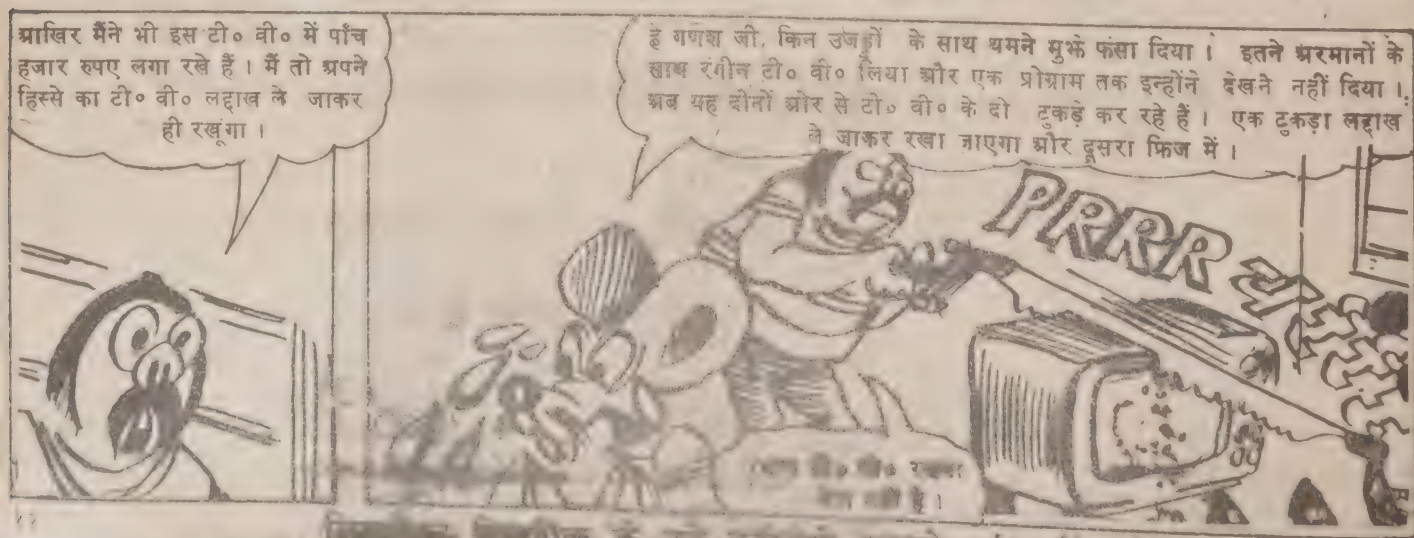
अगले अंक में पढिये

गतांक से आगे

उधर बच्चन रेलवे स्टेशन पर उतरे, तो उनके अनुयायियों ने तोड़फोड़ और शोर मचा कर उनका स्वागत किया। उधर कोई रेलवे विभाग में नयी उमर का लड़का टिकिट संग्राहक बन कर आया था। मन में सच्चाई का फितूर था, अतः बच्चन जी को बगैर टिकिट पकड़ लिया। फिर क्या था!! ईंट-पत्थरों, नारेबाजियों और गालियों से रेलवे स्टेशन गूंज उठा—'रेल विभाग :- हाय! हाय! रेलमंत्री हाय! हाय। हजारों रुपये की सम्पत्ति स्वाहा कर दी गयी। अगले दिन अखबारों में छपा-कल जनता के प्यारे नेता चौधरी बच्चन सिंह दिल्ली रेलवे स्टेशन पर उतरे तो सरकार ने जानबूझ कर उन पर हमला करवाया। उन पर बड़े ही घटिया ढंग से डब्लू-टी का आरोप लगाया गया। सरकार उनकी लोकप्रियता से घबराने लगी है। अतः निम्न से निम्न कार्यों पर उतर आयी है।'

खैर बच्चन बड़ी शान से गांधी जी की समाधि पर पहुंचे और झट से उनकी छाती पर चढ़कर बोले-'हे बापू : हाथ में काशी जी का गंगाजल लिये मैं आज कसम खाता हूं कि सच्चाई, ईमानदारी, सेवा और देश प्रेम जैसे झंझटों से मैं हमेशा दूर रहूंगा और कुर्सी की पूजा में ही अपना जीवन गुजार दूंगा। जब-जब देश में अकाल, भूखमरी, दैविक प्रकोप तथा महंगाई बढ़ेगी, तब मैं दलबदल से पीछे नहीं हटूंगा। मैं बात तो हमेशा दलित वर्ग पिछड़ी जाति और प्रगति तथा समाजवाद की करूंगा, मगर साथ सदैव पूंजीपतियों का दूंगा। हे! बापू: मैं देश का हमेशा भला बना रहूँ मगर यदि मुझे कुर्सी न मिले तो मैं विभीषण का पार्ट अदा करूँ और यदि किसी तरह कुर्सी पर विराजमान हो जाऊँ, तो मैं कुम्भकरण की नींद सोऊँ। मैं सच्ची आत्मा से कहता हूँ कि चुनाव में मेरा व्यय होगा, उसे ब्याज सहित जनता से वसूल करूँगा और कुर्सी पर पहुंचते ही उसके चारों तरफ बारूद बिछा दूंगा ताकि कोई भी मुझसे चुनाव में किये गये वायदों को पूरा करने के लिये न कह सके। और अन्त में—हे बापू मैं हमेशा चिल्लाऊँगा कि मैं सच्चा गांधी वादी हूं मगर आपके लचर-पचर सिद्धांतों से मेरा कोई वास्ता नहीं होगा।'

इस तरह गांधी जी की समाधी पर शब्दों का कुचक्र रच कर बच्चन सिंह सक्रिय राजनीति में कूद पड़े। एक प्रकाँड पंडित और त्रिकालदर्शी को अपनी जन्मकुण्डली दिखाई। ज्योतिषि ने बताया-'बच्चा पूर्व जन्म में तुम काले नाग थे और दूसरे जन्म में गिरगिट थे। इस बार तुम पूरे पांच दल तोड़ोगे। राजनैतिक मंत्र का जाप किया करो बच्चा।'

'वह क्या है महाराज?! बच्चन सिंह ने उत्सुकता से पूछा।

'सत्यम् भक्षम् चः झूंठो उवाच' अर्थात सत्य को खाकर झूठ उगल दो।'

बच्चन सिंह अब इसी मंत्र का जाप करने लगे।

उधर एक व्यक्ति शूट-बूट धारी भयानक मोटे और नाटे व्यक्ति के सामने थर-थर काँप रहा था।

'मुझे मत मारो शिब्बनदा। मेरे दो मासूम बच्चे, जवान बीबी सब अकेले रह जायेंगे। मैं तुमसे प्राणों की भीख मांगता हूं शिब्बन दा।'

शिब्बन जो अब एक स्मगलर बन चुका था। ठहाका-पर ठहाका लगाये जा रहा था। अचानक ये हँसी बन्द हुई और शिब्बन की आंखों में खून उतर आया। वह बोला-'शेरसिंह अपनी परीक्षा में सफल होने के लिये हमें तेरा खून करना ही पड़ेगा।'

'नहीं! शिब्बन दा : ये पाप है :

'क्या कहा!; ये पाप है? उसने धांय-धांय करके गोली दाग दी। शेरसिंह रक्तरंजित तड़पने लगा—'ओहः पापी : तूने मेरे मासूम बच्चों पर भी रहम नहीं किया। भगवान तुझे कभी माफ नहीं करेगा।' शेरसिंह का शरीर ठंडा हो गया। उधर शिब्बन खुशी से चिल्लाने लगा। मैं प्रथम आया हूं। मैंने परीक्षा पास कर ली है। वह चारपाई पर पड़ा-पड़ा बड़बड़ाये जा रहा था। मिस रीटा ने उसे झिझोड़ कर जगाया 'मिस्टर शिब्बन-दा आप सपना देख रहे हैं। उठ चलिये बास ने आपको याद किया है। आज सेठ करोड़ीमल का हीरे का हार चुराना है।'

शिब्बन खड़ा हुआ मगर दुखी मन से। किस तरह बच्चन से उसने बाजी जीत ली थी मगर आँख खुलने पर सब गुड़गोबर हो गया। शिब्बन अब चोरी का स्मगलर हो गया था। इधर का माल उधर और उधर का माल इधर। बीच में दूसरों के माल की डकैती करने लगा था। एक बार एक फ्रांस का व्यापारी शिब्बन के बॉस को अग्रिम एक लाख रुपये दे गया। उसके बदले में समुद्र तट पर कुछ हीरे और जवाहरात पहुंचने थे। तारीख आठ दिन बाद की तय हुई। बॉस ने यह सब माल एक शूटकेस में भरकर शिब्बन को थमाया और कहा-'एक नीले चश्में वाला सफेद पेन्ट पहिने व्यक्ति तुम्हे बान्द्रा हिल्स पर मिलेगा। जब वह तुम्हारे सामने सी.आई. ऐजेन्ट आफ इंडिया कहे तो तुम शूटकेस उसे थमा देना।'

शिब्बन का माथा ठनका। बोला-'बॉस : वह व्यापारी रकम देकर अपने देश चला गया। दूसरा व्यापारी इसी माल के नकद दो लाख दे रहा है। कौन पूछता है। उसे जाने दो, माल इधर कर दो।' बास की आंखों में खून उतर आया—'विश्वासघात!!' शिब्बन हम तुम्हें अभी गोली मार देते। इतनी घटिया बात कही तुमने।'

'सर! मैंने तो तुम्हारे फायदे की बात कही थी।' शिब्बन ने सरलता से कहा।

'कीमत पैसे की नहीं-ईमान और

शेष पृष्ठ १६ पर

कल्चर

जबसे टी शर्टों के डिजायनों में धारियों वाले डिजायन सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। हर कोई कमर तक जेब्रा जैसा दिखने की कोशिश कर रहा है। इस प्रकार एक जेब्रा संस्कृति की रचना हो रही है। जेब्रा मानसिकता जन्म ले रही है। जरा कल्चर के तमाशे देखिये···

काली सफेद धारियों के पीछे ऐसे लगता है जैसे शरीर सींखचों के पीछे कैद है। बाद में आप जेब काटने या गलत-सलत धंधा करने के जुर्म में कैद हो भी गये तो जेल आपको एक नया टी शर्ट जैसा ही लगेगा।
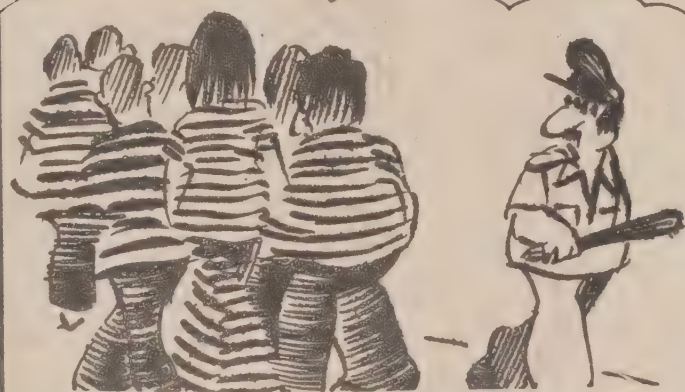
जैसे जेब्रा का झुंड शेर आदि शिकारी जानवरों के लिये लकीरों द्वारा भ्रमजाल पैदा करता है उसी तरह धारियों वाले टी शर्टों वालों की भीड़ करती है। चित्र में देखिए पुलिस वाला देख रहा है कि कोई जेब काट रहा है लेकिन उसे पता नहीं लग रहा है कि कौन किसकी जेब काट रहा है।

धारियां फिलासफरों के लिए चिन्तन का मसाला देती हैं।
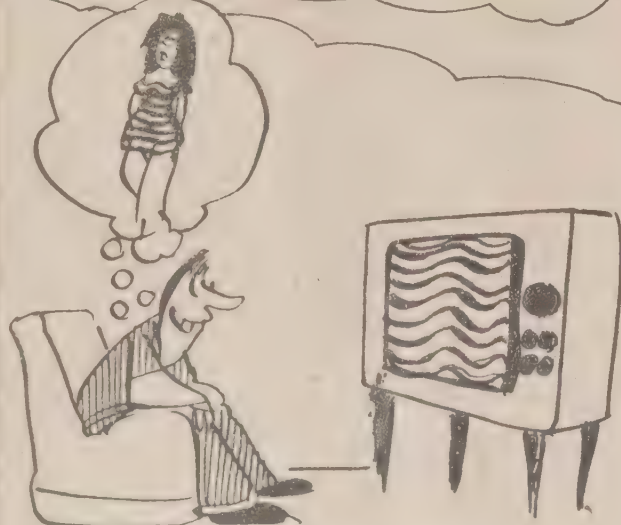
आपका टी. वी. खराब है तो मार्केट में जाकर धारियों वाली टी शर्ट पहने लडकियों को देख-देख आंखें सेकिए। घर आकर टी. वी. लगायें। आपको खराब टी. वी. देखने में भी मजा आयेगा, दिल करेगा इसे ठीक न कराया जाये।

जेब्रा कलचर की मेहरबानी से जेल से भागा कैदी जेल की वर्दी में ही हो तो भी बाहर की दुनिया में आने पर उसे लगेगा कि अपनों के बीच ही आ गए हैं।

धारियों का गहरा चिन्तन करने पर ग्रापको नये-नये ग्राइडिया ग्रायेंगे। चित्र में देखिए रिटायर्ड कर्नल साहब को मूंछों का सही ग्रंदाज क्या होना चाहिये इसका पता लग गया होगा।
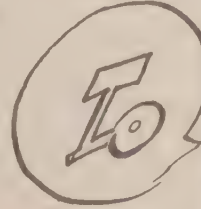
धारियों वाला टी शर्ट शरीर को खुली हवा ग्रौर प्रकाश का ग्राभास देता है। जैसे ब्लाइंड खोलने पर कमरे में ताजगी सी भर जाती है।

पहले लोग समय काटने के लिये समुद्र तट पर जाकर लहरें गिना करते थे। ग्रब इतनी दूर जाने की जरूरत नहीं है। जब भी फालतू समय हो ग्रपने पास खड़ी लड़की की टी शर्ट की धारियां गिनिये।

ग्रापात्काल में धारियों वाले टी शर्ट हिसाब लगाने में सहायक होते हैं।
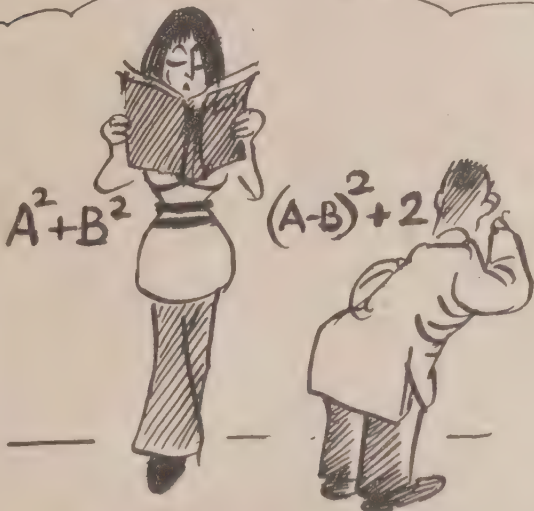
ग्रगर टी शर्ट में दो ही धारियां हों तो प्रोफेसर लोग उसे बीजगणित के समीकरण के चिन्ह के रूप में मान कहीं भी प्रश्न हल कर सकते हैं।
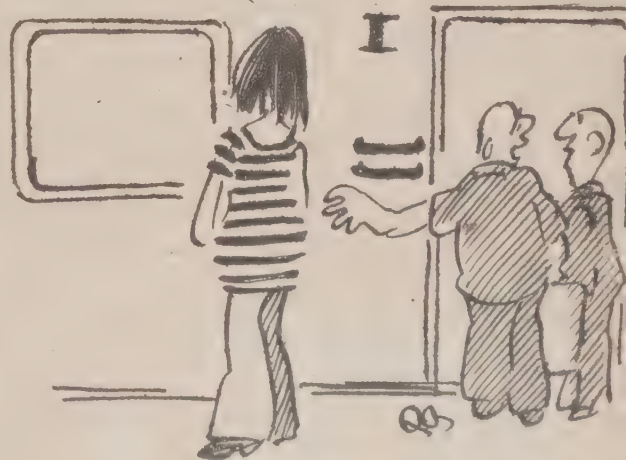
धारियों की मेहरबानी से गलतफहमियों द्वारा हास्यस्पद स्थितियां भी पैदा होती हैं। चित्र में एक ग्रादमी दरवाजे के हैंडल के धोखे में पास खड़ी लड़की की टी शर्ट के कमर की धारी पकड़ने की कोशिश कर रहा है। ग्रभी उसे थप्पड़ पड़ने वाला है।

पृष्ठ १३ से आगे

नियम-कानून की है ।

'तो क्या स्मगलरों के भी नियम कानून होते हैं ।"

'बेशक ।'

'धत तेरे की, फिर मेरा कोचिंग बेकार रहा ।' शिब्बन ने माथा ठोका और नये ट्यूशन की तलाश में निकल पड़ा ।

राजनैतिक मंत्र के जाप ने तुरन्त प्रभाव दिखाया । गिरजा बहन उन दिनों विपक्ष की प्रभावशाली नेता थीं । उनकी पार्टी कुर्सी संघर्ष दल का उन दिनों जोर था । गिरजा बहन ने उन्हें अपनी पार्टी में आने का निमंत्रण दिया । साथ में दो हजार का चेक चाय-पानी के लिये भिजवाया । मगर बच्चन ने अगले दिन अखबार में छपवाया कि—च्चनसिंह को किसी भी पार्टी में विश्वास नहीं हैं । चूंकि सब अल्पसंख्यक विरोधी हैं, इसलिये बच्चनसिंह निर्दलीय चुनाव लड़ने की सोच रहे हैं :'

देश में चारों तरफ चुनावों का दौर था । चौधरी बच्चनसिंह की मार्केट वेल्यू अब बढ़ती जा रही थी । सारी पार्टियां उसे टिकिट देने के लिये तैयार थीं । चूंकि चौधरीबच्चनसिंह काफी असरदार हो गये थे; अतः प्रत्येक पार्टी उसे अपनी ओर मिलाने पर तुली हुई थी । अगले दिन अखबार में छपा-'कि चौधरी बच्चन सिंह 'चेयर संघर्ष दल' में मिलने की सोच रहे हैं ।' मगर अभी कुछ सूत्रों पर उनका दल की अध्यक्षा से मत भेद है ।'

मतभेद है ।'

ऐसे में नंगमदारी पार्टी ने सोचा क्यों न ऐसे में मौके का फायदा उठाया जाये । अगले दिन अध्यक्ष बच्चन के सम्मुख प्रस्तुत हुआ । बच्चन ने उसे अपना अभिप्राय समझाया और रातों रात एक थैली डकार गया । कहीं सचमुच ही बच्चन जैसे हीरे को नंगमदारी पार्टी न हथिया ले, इसलिये रातों-रात दल बदल विरोधी पार्टी बच्चन से मिलकर उसे डबल थैली भेंट करवायी और अगले दिन बच्चन का खण्डन अखबार में यूं छपा ,- 'चूंकि नंगमदारी पार्टी फासिस्ट-वादी तथा समाज विरोधी है, अतः चौधरीबच्चनसिंह जैसे सच्चे समाजवादी तथा प्रगतिशील नेता का इस पार्टी से कोई गठबंधन नहीं है. बच्चनसिंह दल बदल के कट्टर विरोधी हैं। इसलिये अगर वो दल बदल विरोधी पार्टी को अपना समर्थन दे दें, तो कोई आश्चर्य नहीं होगा ।'

बच्चन का भाव सोने की तरह तेज होता गया । जब महाकाल पार्टी ने बच्चन को खरीदना चाहा तो उसने साफ कह दिया—'देखो साहब ! अब बच्चन साधारण बच्चन नहीं है । वह तो नीलामी के लिये सरकारी खजाने से निकला हुआ सोना है । मेरी कीमत ढाई लाख रुपये और एक प्रशस्ति पत्र है ।'

महाकाल पार्टी ने यह सब देकर बच्चन को खरीद लिया । महाकाल पार्टी को सबसे ज्यादा खतरा गिरजा बहन की कुर्सी संघर्ष दल से था । सो अब चौधरीबच्चनसिंह उन्हें लाऊडस्पीकर के रूप में मिल गये थे । चौधरी जगह-जगह भाषण देते और गिरजा बहन को जमकर गालियाँ देते । तानाशाह, लोकतंत्र की हत्यारी, जालिम औरत न जाने कितनी गालियां गिरजा बहन, को दे डालते । जनता कोबच्चनसिंह के व्यक्तव्यों से ऐसा लगता कि जैसे गिरजा बहन कीबच्चन सिंह के साथ कोई व्यक्तिगत दुश्मनी हो । इस चुनाव युद्ध में जलसे, सभायें जुलूस तथा विपक्षी नारे, विपक्षी गालियां और हूटिंग सबकी रिहर्सल बच्चनसिंह करने लगे । महाकाल पार्टी नेबच्चनसिंह को धारवाड़ क्षेत्र से अपना उम्मीदवार घोषित कर दिया ।

इधर सारे क्षेत्र में डाकू शिब्बन उर्फ शिब्बू का आतंक छाया हुआ था । शिब्बन अब एक नामी डाकू बन चुका था । कितनों के उसने घर उजाड़े, माँगें पोंछी और उनका सिंदूर उजाड़ दिया । वह पत्थर दिल बन चुका था । एक दिन जंगल में उसने सुना कि एक विचित्र साधु गांव-गांव और नगर-नगर घूमकर लोगों को जुल्म और अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिये भड़का रहा है । वह गांव वालों को डाकुओं का मुकाबला करने का पाठ पढ़ा रहा है । मगर शिब्बन को साधु से क्या लेना था । मगर एक दिन शिब्बू शहर में जब सेठ दमड़ीमल के घर में अपने गिरोह के साथ घुसा, तो सेठानी उसके पैरों में पड़ गयी और गिड़गिड़ा कर बोली- "चाहे मेरी सारी सम्पत्ति ले जाओ मगर मेरे बच्चे और पति को न मारो ।'

"हट जा सेठानी । शिब्बू की आत्मा सेठ और उसके बच्चे के रक्त से शान्त होंगी । ये सेठ की तिजोरी नहीं, गरीब लाचार और बेबस इन्सानों की आत्माओं की कब्र हैं । हमें सेठ से बदला लेना है ।'

इतना कहकर शिब्बू ने खंजर के प्रहार से सेठ के प्राण ले लिये । जब वह मासूम बच्चे की जान लेने चला तो एक विचित्र घटना घटी । एक विचित्र साधु बच्चे की तरफ झपटा- 'नहीं शिब्बू, ये नहीं । सेठ दोषी हो सकता है मगर ये अबोध बालक निर्दोष है । तू इसके प्राण नहीं ले सकता ।

'ओह : तो तू वो ढोंगी साधु है, जो जनता को बर्गला रहा है । बूढ़े साधु' शिब्बू ने कहा—'जान छोटी हो या बड़ी, डाकू पर क्या फर्क पड़ता हैं । जानते नहीं नाग का बच्चा भी बड़ा होकर नाग ही बनता है । तुम रास्ते से हट जाओ ।'

'नहीं मैं तुझे इस बालक के प्राण नहीं लेने दूंगा ।' साधु आक्रोश से भर गया । शिब्बू ने क्रोध भरी आंखों से साधु को देखा । ये क्या ! साधु के गले में हीरे और माणिकों की माला ।

'ओ बूढ़े ! साधु, ये माला मुझे दे जा ।' शिब्बू ने खंजर की नोक पर साधु से वह माला छीननी चाही ।

'अरे मूढ़, तू इस अमूल्य रत्न माला का अधिकारी नहीं है।' साधु ने गहरी हँसी हँसते हुए कहा। शिब्बू को क्रोध आया तो उसने साधु की दाढ़ी पकड़ कर खींच ली और बोला—'ब्रह्माण्ड में ऐसा कौनसा पदार्थ है जिस पर शिब्बू का अधिकार नहीं हो सकता। ये रत्नजड़ित माला मेरी है।'

शिब्बू ने माला पकड़कर खींचनी चाही मगर साधु ने ताबड़-तोड़ तीन-चार कमण्डल उसकी कनपटी पर दे मारे। शिब्बू पीड़ा से बिलबिला उठा। उसने अपने सहयोगियों से कहा—'अरे! मूर्खों पकड़ लो इस धूर्त साधु को।'

चारों तरफ से साधु पर लात-घूंसों का प्रहार होने लगा। क्रोधाग्नि में डूबे हुए शिब्बू ने खंजर पूर्ण वेग से साधु के सीने में भोंक दिया। रक्त रंजित साधु तड़प कर भूमि पर गिर पड़ा। उसके गले से वह रत्न जड़ित माला शिब्बू ने खींच ली। मगर ये क्या! माला के मोतियों में गुरु घटोरन का चेहरा!! तो क्या! मैंने अपने ही गुरु के प्राण ले लिये!?! शिब्बन कांपने लगा। कटार हाथों से छूट पड़ी। उसके कम्पित शब्दों से फुसफुसाहट हुई—'ओह! भगवान मैंने ये क्या अनर्थ कर डाला!! अपने ही हाथों से अपने गुरु की हत्या कर डाली।' देखते ही देखते घटोरन के प्राण-पखेरू उड़ गये। शिब्बन ने घटोरन के पैर छूकर कहा...'गुरुदेव आप न रहे तो क्या हुआ। आपने मेरी सर्वोत्तम नीचता देखली। मैं ही आपका सर्वप्रिय शिष्य हूं। बच्चन मुझसे ज्यादा पतित नहीं हो सकता।'

लाठियां चलीं, तो बड़े सिर टूटेऔर नेताओं के ऊपर लोग आपस में जानी दुश्मन बन बैठे। चुनाव का परिणाम आया तो गिरजा की पार्टी को सबसे ज्यादा बहुमत मिला। मगर कोई भी पार्टी सरकार नहीं बना सकी। उधर महाकाल पार्टी के अधिकांश नेता चुनाव हार गये मगर बच्चन भारी बहुमत से विजयी रहा। इस पर भी महाकाल पार्टी को चन्दा खूब मिला था। बच्चनसिंह के पास स्वयं पचास हजार रुपये बच रहे थे। बाद में जब पार्टी का हिसाब हुआ तो बच्चनसिंह से वो रकम मांगी गयी मगर वह साफ डकार गया। इस पर पार्टी के अध्यक्ष ने बच्चनसिंह का जवाब तलब करके उसे कारण बताओ नोटिस दे दिया। इधर गिरजा बहन को सरकार बनाने के लिये कुछ विधायकों की जरूरत थी। अतः अवसर का लाभ उठाते हुए उसनेबच्चनसिंह से पांच लाख में सौदा कर लिया। बच्चनसिंह ने अपना मौका ताड़ा, राजनीति की लाईन में आये और घुमाकर स्क्वायर कट कर दिया। कोई भी महाकाल खिलाड़ी उनके छक्के को नहीं रोक सका। वो कुछ विधायकों को तोड़कर ऊपर-ही ऊपर बाउन्ड्री लाईन पार करके गिरजा जी से जा मिले। उनके इस छक्के की कामेन्ट्री इस प्रकार शुरू हुई—'महाकाल पार्टी ने अपना विश्वास जनता से खो दिया है। यह अब सच्चे अर्थों में गांधीवादी नहीं है। आज देश को सुदृढ़ पार्टी की आवश्यकता है। मेरी राय में गिरजा बहन ही एक मात्र नेता हैं जो देश को बचा सकती हैं। पिछले दिनों जो मैंने उनकी कड़ी अलोचना की थी, उससे वो काफी सुधर गयी हैं। इस समय मुझे उनसे कोई शिकायत नहीं है। अतः मैं गिरजा जी के तीव्र अनुरोध पर उनके साथ देश की समस्यायों को सुलझाने में लग गया हूं। वैसे मुझे पद की कोई इच्छा नहीं है मगर चूंकि मैं उनकी पार्टी में अभी नया-नया हूं; अतः उनके अनुरोध को मैं टाल भी नहीं सकता, सो पार्टी के महासचिव का पद संभाल रहा हूं।'

लोग बच्चन को दलबदलु कहने लगे तो उसने बड़े इत्मीनान से जनता को जवाब दिया- 'भाईयों! किसी दल को तोड़कर उसके सामने-एस-लगाकर नये दल के गठन को दल बदल नहीं कहते बल्कि उसे वीरता और त्याग कहते हैं।

'अक्ल से जीत जाये जो,
उसे कम अक्ल नहीं कहते।
जो पाँचवे वर्ष दल बदले
उसे दल बदलु नहीं कहते॥'

बच्चन की अखबारों ने खूब छीछा-लेदर की मगर बच्चनसिंह पर कोई असर नहीं पड़ा। शर्म तो जैसे उसको छू तक नहीं गयी थी। समय की बात थी। देश में भयंकर सूखा, भीषण बाढ़ और चारों तरफ चक्रावात आने शुरू हो गये। चारों तरफ त्राहि-त्राहि मच गयी। सत्ताधारी गिरजा बहन की खूब आलोचना हुई। बच्चन ने स्वयं को गिरजा बहन का तगड़ा चमचा सिद्ध कर दिया था मगर अन्दर ही अन्दर वह गिरजा बहन की हंडिया को तोड़ने की कोशिश कर रहा था। उसकी नजर बहन जी कुर्सी पर लगी थी। देश में फैली सूखा, गरीबी और गुण्डागर्दी से यद्यपि जनता की कमर टूटी पड़ी थी मगर भेड़चाल में बच्चन का जुगाड़ बैठ गया। एक दिन जैसे ही वह बहन जी के चरणों में दण्डवत करने गया कि उसने पूरे जोरों का धक्का लगाया। कुर्सी के अगले दो पाये ऊपर उठ गये और गिरजा बहन पीछे की तरफ चारों खाने चित्त जा पड़ीं। बच्चन, चौधरी बच्चनसिंह "क्रान्तिकारी" के नाम से कुर्सी पर बैठ गये। सबसे पहले उन्होंने अपनी कुर्सी को वैल्ड कराया तथा वैल्ड करने वाले को नकली वैल्ड करने के आरोप में नजरबन्द कर लिया। क्योंकि बच्चनसिंह को डर था कि कहीं यह आर० एस० एस० के चक्कर में आकर मेरा वैल्ड उखाड़ न दे। उसके बाद उन्होंने देश में काला मीसा लगा दिया। चोर-डाकू-स्मग्लर नेता और अभिनेताओं की धरपकड़ शुरू हो गयी। गिरजा बहन को पकड़कर धारवाड़ भेज दिया गया। बच्चनसिंह ने अपने क्षेत्र की जनता को अपनी पहली सफलता दिखलाई। पूरे देश में बच्चन शाही चलने लगी। नेता जेल में पड़े-पड़े सड़ने लगे। बच्चनसिह ने ऐलान कर दिया—'कि मेरे प्रशासन में लोग अंधेर नगरी के चौपट राजा को भूल जायेंगे।' कुछ दिनों बाद बच्चनसिंह ने सुना कि शहर में एक भोग-ब्रह्मचारी लोगों को शासन के खिलाफ भड़का रहा है। वह प्रतिक्रिया वादी तत्वों के साथ मिलकर बच्चनसिंह की कुर्सी तोड़ने के चक्कर में है। बच्चन सिंह तिलमिला उठे उन्होंने कठोर आदेश दिया—'कि ब्रह्मचारी को पति घसीटते हुए मेरे सामने ले आओवाली मूंछ है।

एक दिन इसी

शेष पृष्ठ

रामलीलाइटिस

आप सोच रहे होंगे यह क्या बला है। यह ब्रान्काइटिस और हिपाटाइटिस की तरह ही बीमारी है। यह उनको हो जाती है जिनके घर रामलीला मंचों के नजदीक हैं। लाउड स्पीकरों से जोर से आते रामलीला डायलाग मनोवैज्ञानिक असर डालते हैं और आसपास रहने वालों के आचार-विचार में परिवर्तन लाते हैं। इनको हम रामलीलाइटिस सिम्प्टम कहते हैं। कुछ उदाहरण देखिये—

बीवी झगड़ा होने पर जहर खाने की धमकी देने के बजाय कहने लगती है, "धरती क्यों नहीं फट जाती मैं उसमें समा जाती।"

रामलीला से मंथरा की हवा लगने पर चमचे अधिक सक्रिय हो जाते हैं। वह दफ्तर जाकर चुगलखोरी ज्यादा करने लगते हैं।

लड़के रामचन्द्र जी के आदर्श को ध्यान में रखते हुए बापों को धमकी देते हैं कि वह घर छोड़कर चले जायेंगे।

आदमी ... रावण की नकल करता है, जोक सुनाने पर ... मनभेद है।' ... ऐसे में नगमदा ... ंर साइलेंसर का मोटर साइकिल ... लू हो गया हो।

किसी को ड्यूटी टूर पर जाने की लगी रहती है तो बीवी को रामलीलाइटिस होने पर वह भी साथ जाने की जिद करती है। सीता जी भी तो गई थीं।
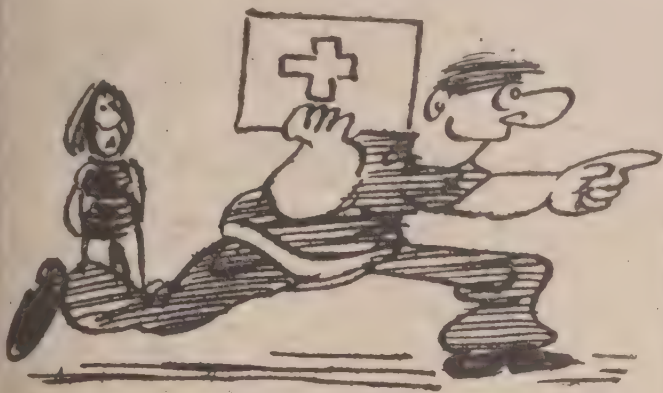
किसी को दुर्घटना स्थल पर फर्स्ट ऐड बाक्स ले जाने का अवसर मिले तो वह बक्सा ऐसे पकड़ेगा जैसे हनुमान जी पहाड़ उठाकर ले जा रहे हों।

घर आने पर पति को बीवी बाल बनाती मिले तो उसके रौंगटे खड़े हो जाते हैं कि कहीं कैकेयी की तरह यह बाल बिखेर कर कुछ मांगना तो नहीं चाहती जैसे नई साड़ी या नैकलेस।

रामचन्द्र जी ने सीता के लिये धनुष तोड़ा था हर प्रेमिका जो रामलीलाइटिस से ग्रसित होती है वह चाहती है कि उसका प्रेमी उसके लिये भी कुछ तोड़े जैसे दूसरी प्रेमिका का दिल या अपने मां-बाप से सम्बन्ध।

बड़े भाई छोटे भाइयों से खूब काम करवाते हैं। सिगरेट-पान मंगवाते हैं। रामलीलाइटिस की बीमारी में बड़े भाई को यह पक्का विश्वास हो जाता है कि छोटे भाइयों का काम उसकी सेवा करना है।

प्रेमी को जोर-जोर से बोलने की आदत पड़ती है। रामलीला में जोर से बोले डायलाग सुन-सुन कर चित्र में लड़का लड़की से कह रहा है "आई लव यू"। सारा मुहल्ला सुन रहा है। कुछ ही देर में इसकी ऐसी पिटाई होगी कि इसे हाथ-पैरों का प्लास्टर आफ पैरिस से लव हो जायेगा।

ऊंचे-ऊंचे स्वर में बोले डायलाग सुन-सुनकर आस-पास रहने वालों के कान बहरे हो जाते हैं। चित्र में स्त्री अपने पति से कह रही है कि सिगरेट से उसकी बायीं ओर वाली मूंछ में आग लग गई है। उसे सुनाई नहीं दे रहा है।

चनाकुरमुरा

एक दिन सुबह हमारी सेलिंग क्लब में इंस्ट्रक्टर अपने नये लाउडस्पीकर को टेस्ट कर रहे थे, उन्होंने लाउडस्पीकर का मुंह क्लब हाऊस की ओर किया और जोर से चिल्लाये 'यह पुलिस है! हमें मालूम है तुम वहां भीतर छुपे हो, अपने हाथ ऊपर कर फौरन बाहर आ जाओ।'

हमने हैरानी से देखा दो बूढ़े से सफाई करने वाले अपने झाड़नों को हाथों में अपने सिर के ऊपर उठाये, इमारत से कांपते-कांपते बाहर आ खड़े हुये।

●

अपने प्रथम गर्भ के समय ही मैंने और मेरे पति ने बच्चों के सामने न लड़ने का फैसला कर लिया था। तब से हमारी सभी लड़ाइयां मुस्कान युक्त प्रेम भरे शब्दों में डियर और डार्लिंग से भरी होती हैं।

एक दिन जब मैंने अपने तीन वर्षीय बच्चों को बुरी तरह लड़ते देखा, तभी मुझे अपनी लड़ाईयों के दिखावटी प्रभाव का पता चला। मैंने पूछा, लड़ना किसने शुरू किया था और मुझे जवाब मिला, 'पहले उसने मुझे डार्लिंग कहा था मम्मी सच मम्मी उसने यही कहा था।'

●

एक बार मेरे जूतों के विक्रेता मित्र बहुत ही हैरान हुये जब एक छोटे से कद की बूढ़ी औरत ने आकर प्लेटफार्म हील के जूते मांगे। बहुत सारे जोड़े पहन कर देखने के बाद महिला ने एक बहुत ही स्टाइल वाला 12 सेंटीमीटर मोटे सोल का जूता पसन्द किया। कौतूहलवश मेरे मित्र ने पूछा कि क्या जूते किसी विशेष समारोह के लिये खरीदे गये हैं।

'अरे, अरे नहीं!' बूढ़ी महिला ने उत्तर दिया, यह मेरे कपड़े धोने के समय पहनने के काम आयेंगे। इन्हें पहन कर मैं इतनी लम्बी हो जाऊंगी कि चादरें रस्सी पर सुखाते समय उनका निचला सिरा जमीन को नहीं छुएगा।'

●

पाक-इंगलैंड क्रिकेट टैस्ट शृंखला

(इंगलैंड, २-१ से शृंखला में विजय प्राप्त की)

बल्लेबाजी

इंगलैंड

	टैस्ट	पारियां	नाट आऊट	रन	उच्चतम	शतक	औसत
जी. फाउलर	1	2	—	95	86	—	47.5
क्रिस टावरे	3	6		216	82		36.0
डेविड गावर	3	6		197	168		32.8
डेरेक रेडंल	3	6		168	105		28.0
राजर टेलर	3	6	2	111	54		27.7
ईयन बाथम	3	6		163	69		27,1
जी. मिलर	1	2		52	48		26.00
माइक गैटिंग	3	6	1	111	32		22.2
वी. मार्कस	1	2	1	19	12		19.00
ई. हैमिन्ज	2	3		41	19		10.2
डेसक प्रिंगल	1	2		19	14		9.50
आर. जैकमान	2	3		28	17		9.3
एलेन लैम्ब	3	6		48	13		8.00
आई ग्रेग	2	4		26	14		
राजर विलिस	3	3	3	29	28		6.50

पाकिस्तान

	टैस्ट	पारियां	नाट आऊट	रन	उच्चतम	शतक	औसत
मोहसिन खान	3	6	1	310	200	1	62.00
इमरान खान	3	6	1	212	67		53.00
जावेद मियांदाद	3	6	1	178	54		35.6
मंसूर अख्तर	3	6	1	154	58		30.80
वसीम बारी	3	5	2	82	24		27.3
जहीर अब्बास	3	5					
वसीम राजा	1	2	—	131	75	—	26.2
ताहिर बक्श	2	3	—	42	26	—	21.00
मुबस्सर नजर	3	5	—	53	39	—	17.66
माजिद खान	1	2	—	85	65	—	17.00
अब्दुल कादिर	3	5	1	31	21	—	15.50
सिकन्दर बख्त	2	4	1	56	18	—	14.00
हारुन रशीद	1	1	—	16	7	—	5.33
एहतेशामुद्दीन	1	2	1	1	1	—	1.20
सरफराज नवाज	1	—	—	—	—	—	—

इगलैंड

	गेंदें	मेडन ओवर	रन	विकेट	सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन	औसत
मिलर	58	2	27	2	2.26	13.50
विलिस	444	14	222	10	3.55	22.20

→

प्र० : कृत्रिम सौंदर्य प्रसाधन हमारी
चा को हानि पहुंचाते हैं ? कौन से
कृतिक प्रसाधन त्वचा के लिये
भकारी होते हैं ?

उ० स्नान के बाद दिनभर भीनी
नी सुगन्ध की ताजगी सभी चाहते हैं।
, यू.डी कोलोन और टैल्कम पाउडर
से प्रसाधन इन दिनों बहुत बिकते हैं।
से अधिक टैल्कम पाउडर का ही
लन है। विशेष कर गर्म देशों में
उडर ताजगी, ठंडक और सुगन्ध के
ये इस्तेमाल किया जाता है। पसीने
रोकने और किटाणु रोधकता का
कुछ पाउडर दावा करते हैं। लेकिन
के विपरीत वास्तविकता यह है कि
डर की त्वचा पर पर्त जम जाने से
ा उत्पन्न होती है जो त्वचा के लिये
शरीर के लिये हानिकारक है। वैसे
सुगन्ध व ताजगी की अनुभूति के
टैल्कम पाउडर का कोई विशेष
दान नहीं है। पाउडर में अधिकतम
ा कैल्शियम कारबोनेट अथवा चूने की होती है और इसका अधिक प्रयोग त्वचा में खुश्की पैदा कर सकता है।

घमौरियों के लिये भी कुछ विशेष पाउडरों का प्रचलन है, परन्तु खसखस व चंदन का लेप घमौरियों की शांति के लिये बहुत ही लाभदायक है और इसका प्रचलन भी बहुत समय से है। प्राचीन काल से ही सुगन्ध के लिये खस, चंदन, गुलाब, मोगरा, चमेली व चंपा के फूलों का उपयोग होता आ रहा है। बेगमों के गुलाब की पंखड़ियों के पानी से स्नान करना प्रसिद्ध है।

स्नान केवल सुख ही नहीं है, यह शरीर और मन दोनों के स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है। आधुनिक प्रसाधन इस फैशन परस्त युग में निश्चय ही स्नान का आकर्षण बढ़ाते हैं, परन्तु यह निश्चय ही उतने गुणकारी नहीं हैं जितने कि सदियों से चले आ रहे परंपरागत प्राकृतिक प्रसाधन।

प्र० : संसार की सबसे बड़ी झील कहां है और कितनी बड़ी है।

उ० : संसार की सबसे बड़ी झील का नाम 'लेक सुपीरिया' यह अमरीका और कनाडा के बीच स्थित है। यह झील 3200 वर्ग मील के क्षेत्र में फैली हुई है। हालांकि 'लेक सुपीरियर' क्षेत्र के हिसाब से सबसे बड़ी झील हैं परन्तु पानी की मात्रा में यह दक्षिणी सायबेरिया के 'लेक बेयकाल' से कहीं कम है। क्योंकि चाहे इस लेक का क्षेत्र केवल 12000 वर्ग मील का है परन्तु यह झील 6000 फुट गहरी है।

लेक सुपीरियर लगभग आस्ट्रिया के बराबर है, यह झील लगभग 400 मील लम्बी है और कोई 200 नदियां इसमें आकर गिरती हैं।

यहां लगभग ज्वार न के बराबर है परन्तु शरतकाल और शीतकाल के तूफानों के दौरान लहरें बहुत ही खतरनाक ऊँचाईयों तक पहुंच जाती हैं। यह लहरें धीरे-धीरे झील के किनारों को काट रही हैं इस कारण झील धीरे-धीरे और भी बड़ी होती जा रही है।

इस झील के असीम उद्योगिक फायदों और यातायात सुविधा के कारण इसका पानी बुरी तरह दूषित होता जा रहा है। सन् 1965 के बाद से अमरीका की सरकार ने इस विशाल झील के पानी को साफ करने का प्रयत्न कर दिया है।

टकसालों में सिक्कों को इनके चारों ओर के किनारों को उभार कर बनाना सन् 1915 में आरम्भ हुआ था। सिक्के के चारों ओर यह उभार मूलतः इसके दोनों ओर के नमूनों को सुरक्षित रखने की खातिर शुरु किया गया था साथ ही इससे सिक्कों की ढेरी लगाने में भी सुविधा होती है।

सिक्कों में कोई भी विशेशता जैसे उनके किनारों का उभार, नकली सिक्के बनाने वालों के लिये अधिक कठिन होते हैं और इसी से धोखा धड़ी कठिन हो जाती है। केवल राष्ट्रीय टक सालों में लगी जटिल मशीनें ही इन सिक्कों के किनारों का उभार समान बना सकती हैं।

←

	गेंदें	मेडन ओवर	रन	विकेट	सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन	औसत
म	905	23	478	18	5-74	26.55
	188	6	114	4	4.53	28.50
मान	630	30	247			
स	42	1	31	8	4-1110	30.87
ज	337	12	149	1	1.8	31.00
ग	80	3	21	3	2-56	49.66
ल	156	9	62	0	—	—
			पाकिस्तान			
सर	324	18	104	10	6.32	10.40
र बक्श	312	20	117	7	5.40	1[illegible].71
ान खान	1071	48	393	21	7.52	18·71
राज नवाज	222	9	78	3	3.56	26.00
ल कादिर	965	48	406	10	4.39	40,60
शामुद्दीन	84	4	46	1	1.46	46.00
न्दर बख्त	450	19	179	3	2,47	59.66
म राजा	15	—	0	1	1.0	—

क्यों और कैसे ?
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२
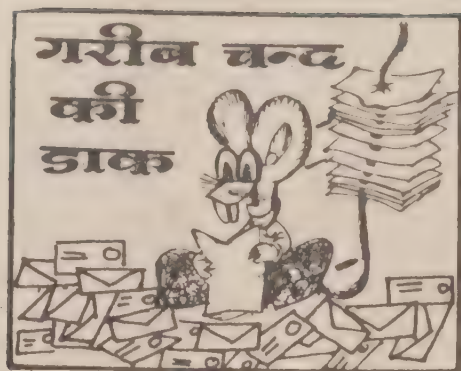
धर्मेन्द्र सिंह, बस्तर : गरीबचंद जी आज तक क्या आपको किसी से डर लगा है।

उ० : किसी से डर तो नहीं लगा ! हां जुकाम और खुजली बहुतों से लगी है।

अशोक सिंह ठाकर, हैदराबाद : डियर गरीबचंद ये 'आंखें चार होना' का क्या मतलब है ?

उ० : ये 'आँखें लड़ना' का अहिंसावादी रूप है।

ओ. पी, भाटिया (टीटू), मन्जू भाटिया, पहाड़ी धीरज : प्रिय गरीब कहते हैं कि मिल जाती है हर चीज दुआ से क्या यह बात सही है ?

उ० : हर चीज दुआ से मिलती होती भाई तो चारों तरफ रोना-धोना, मार-काट न होती।

राजेश कमार 'बुध', सिरसा : डियर गरीबचंद जी, धन हाथ का मैल है, फिर भी लोग इस मैल को अपनी जेब में क्यों डालना पसंद करते हैं ?

उ० : जेब में पड़ा रुपया मैला नहीं होता। वह तो मैल तब बनता है जब वहां से निकल अपने हाथ से दूसरे के हाथ में जाता है।

प्रेम बाबू शर्मा 'सुमन', बगीची पीरजी: गरीबचंद जी, दुनिया में आप किसे अमीर मानते हैं, पैसे वाले को या अक्ल वालेको

उ०: दोनों ही गरीब हैं। पैसे वाला पैसे खर्च करना नहीं जानता। अक्ल वाला अक्ल से पैसा कमाना नहीं जानता।

राजेन्द्र कुमार नाहर, जबलपुर : गरीब चंद जी आपकी मूंछ हर समय सिगनल क्यों देती रहती है ?

उ० : मूंछों के ऊपर दिमाग में विचारों की गाड़ियां दौड़ती ही रहती हैं।

दिनेश मनचन्दा 'डायमन्ड', रोहतक : मैं एक फिलम बना रहा हूं। उसके लिए हीरोइन तो आज पिंजरे में फंस गई है। क्या आप हीरो बनना पसंद करेंगे ?

उ० : क्या आपके अपने चेहरे पर चेचक के दाग-वाग हैं ?

उमेश ज्ञानचन्दानी 'उम्मी', बिलासपुर : गरीबचंद जी, यदि प्रेमिका, प्रेमी के घर के पास चक्कर लगाना शुरू कर दे तो ?

उ० : तो समझ लो कि प्रेमी पूरा घन-चक्कर है।

योगेश कुमार, डीमापुर : बेवफा हसीनाओं को आप सबक सिखाने का ठेका लेंगे क्या ?

उ० : क्यों मेरा सिर ही बचा है ओखली में देने के लिए ?

श्री विनय मिश्र 'दीवाना', नई दिल्ली : जिन्दगी क्या है और मनुष्य जीता क्यों है

उ० : जिन्दगी प्रकृति का ईशू किया राशन कार्ड है और मनुष्य अपनी स्थितियों के अनुसार उसमें से दुःख-सुख का कोटा पाता रहता है। जीता इसलिए है कि मौत से डरता है।

प्रहलाद जसवानी, कृष्णकन्हैया, मण्डला : गरीबचंद जी, स्वर्ग में क्या होता है और नर्क में क्या होता है ?

उ० : स्वर्ग में वही होता है जो पर्यटन विभाग की प्रचार पुस्तिकाओं में होता है और नर्क में वही होता है जो समाचार पत्रों में रोज छपता है।

मो० इलयास, चमन गंज : दुनिया में सब अच्छे लोग कम आयु में मर जाते हैं?

उ० : भाई मेरे बुरे लोग भी मरते रहते हैं। फर्क यही है कि उनके मरने पर हम रोते नहीं हैं।

सुरेन्द्र खुराना 'काका', पानीपत : विवाहित महिला से प्यार करना कब खतरनाक सिद्ध होता है ?

उ० : जब उसका पति थानेदार हो या शिकारी।

राजेन्द्र पाल, रुद्रपुर : कृपया बतायें कि यदि मनुष्यों की भी आपकी तरह पूंछ होती तो कैसा रहता ?

उ० : चमचों का पता लगाना आसान हो जाता क्योंकि उनकी पूंछ हिलती रहती।

राजकुमार छाबड़ा बलामौर : मैंने एक छोटी-सी चुहिया पाल कर रखी है। आपसे उसकी शादी करना चाहता हूं। बारात कब लेकर आ रहे हैं।

उ० : सबसे पहले मैं यह पता कर चाहूंगा कि आपने वह पाली क्यों आपके उसके साथ क्या सम्बंध हैं ?

शंकर लाल 'निराला', पनागर, जबलपु प्यारे गरीबचंद जी, आपकी गरीबी हमें बहुत तरस आता है, हमारे प बहुत कुछ है, क्या एक बार सेवा मौका देंगे ?

उ० : आपके पत्र की फोटो स्टेट का इन्कम टैक्स वालों को भेज रहा हूं। अपनी सेवा खुद ही कर लूंगा वहां मिले कमीशन से।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

फैण्टम - गुमनाम कमाण्डर

फैन्टम बिजली से भी तेज है, जंगल की प्राचीन कहावत ।
!!!

उसने हमारी राईफलों को निशाना बनाया ।
हैरान कर देने वाला निशाना ।
चलता-फिरता भूत !

अच्छा, मिस्टर ! तुम जीते । आदिवासी जूरी के सामने जाने से हमें डर लग रहा है ।
क्या तुम हमें बता सकते हो, हम क्या करें ?
'बताता हूं ।'

सीधा है, जो तुमने किया है, मान लो, चीता घायल किया है, जुर्माना भर दो और भाग जाओ ।
इसकी रिवाल्वर भी छीन लो ।
पकड़ लो उसे ।

पकड़ लो ।
!
रिवाल्वर छीन लो ।

फैन्टम को मदद चाहिये ।
हम जायें ?

रुको···देखो···

जैसे ही शिकार चोर हमला करते हैं ।
!
!

अच्छा हुआ तुमने हमला किया ।
??
मुझे तुम्हें मारने की वजह मिल गई ।

- ऊपर दिए रेखाचित्र में अपने मनपसंद कालिक रंग भरिए.
- इस प्रतियोगिता में केवल 14 वर्ष तक की आयु के छात्र ही भाग ले सकते हैं.
- निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम होगा. इस संबंध में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाएगा.

नाम ____________________ आयु ____________________

पता ____

प्रवेश पत्र भेजने की अंतिम तिथि १०-११-८२

अपना प्रवेश पत्र इस पते पर भेजिए :—

कालिक इंडस्ट्रीज

69, नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली-15.

प्रथम पुरस्कार : 30 रुपए
द्वितीय पुरस्कार : 20 रुपए
तृतीय पुरस्कार : 10 रुपए

फिल्मी ड्रामा

तेरी मांग सितारों से भर दूं

नूतन—कामिनी, पद्मिनी कोल्हापुरे—अंजलि, राज किरण—आनन्द, अमजद खान—सुल्तान, शशि कला—बेबन।
निर्माता-निर्देशक—राज खोसला
संवाद—राही मासूम रजा, गीत—आनंद बख्शी, संगीत—लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल।

(एक पति-पत्नी और उनकी बेटी खड़ी है) मां : अरे घर तो चलकर देख तेरे डैडी ने कैसा वन्डरफुल पेपर लगवाया है। (अंजलि देखती है)। (कांवेंट की मदर अंजलि से) मदर : वाट इज द मैटर माई चाइल्ड ? अंजलि : नथिंग एट आल मदर। मदर : तुम्हारी मम्मी नहीं आयीं अब तक। अंजलि : आती ही होंगी मदर। मम्मी बहुत बिजी रहती हैं मदर। इतना बड़ा बिजनेस और अकेली सम्भालती हैं। उनका बस चले तो एक मिनट भी अलग न रहें मुझसे। (अंजलि की मां आती है) अंजलि : मैं नहीं बोलती आपसे। आप बहुत खराब मम्मी हैं। कामिनी : अरे, अरे। मदर : अभी-अभी तो मुझसे कह रही थी मेरी मम्मी दुनिया की मोस्ट वन्डरफुल मम्मी है। अंजलि : अबकी हम लोग कहां जा रहे हैं ? कामिनी : तूने साउथ देखा नहीं है न, तो अब की हम लोग वहां से सीधे केरल जा रहे हैं। अंजलि : हम लोग सीधे यहां से घर जा रहे हैं। हर साल आप घर चलने का वादा करके मुकर जाती हैं। कामिनी अगर तू चाहती है कि मुझे तेरे साथ जरा-सा भी समय न मिले तो ठीक है घर ही चलते हैं। अंजलि : वक्त क्यों नहीं मिलेगा, वक्त कोई शक्कर या दवा है जो बाजार से गायब हो जाये। कामिनी : देख अंजलि मेरी बात सुन घर तू अगर चलेगी तो काम में गिरफ्तार रहूंगी। तेरे साथ घण्टा-आध घण्टा गुजारने का वक्त मिलेगा और उसमें भी कभी टेलीफोन कभी टेलीग्राम। मैं चाहती हूं छुट्टियों का एक-एक पल तेरे साथ गुजारूं अब बोल घर चलूं या केरल। अंजलि : केरल।

(कामिनी खड़ी है अंजलि घोड़े पर जाती है, पीछे दूसरे लोग घोड़े पर जाते हैं। कामिनी बाई : बहुत दूर मत जाना। सम्भल-सम्भल के चलना। घोड़ा बेकाबू

हो जाता है। आनन्द आकर घोड़े को काबू करता है और अंजलि को उतारता है) आनन्द : है इतनी छोटी-सी और घोड़ा चुना इतना बड़ा। अंजलि : थैंक्यू। आनन्द : आप कमाल करती हैं, इसमें शुक्रिया अदा करने की क्या जरूरत है, आखिर फर्ज भी कोई चीज होती है। आपका घोड़ा गाफिल हो रहा हो और मैं खड़ा-खड़ा तमाशा देखता रहूं। आनन्द : आपका नाम कुसुम रानी होना चाहिए। अंजलि : जी नहीं। आनन्द : अच्छा तो फिर आशा मल्होत्रा होना चाहिए। अंजलि : जी नहीं मैं मल्होत्रा नहीं हूं। आनंद : कोई बात नहीं आशा तो हैं आप, निराशा तो आपका नाम हो ही नहीं सकता। खैर, नाम की बात छोड़िये आप यहीं पढ़ती हैं। अंजलि : मेरी मम्मी कहती हैं स्ट्रेंजर से ज्यादा बात नहीं करनी चाहिये। आनंद : तो फिर कम बात करिये, अगली मुलाकात में मैं स्ट्रेंजर नहीं रहूंगा अब आप बोलेंगी। आज मैं बोलता हूं, सुनने को तो मना नहीं किया है मम्मी ने।

(अंजलि वापस आकर मां को बताती है) कामिनी : होगा कोई बदतमीज। अंजलि : नहीं मम्मी, उसने मेरे साथ बदतमीजी थोड़े ही की। बस बोलता बहुत है। बड़ी इंट्रेस्टिंग बातें करता है। आनंद नाम है। कामिनी आनंद ! अच्छा अब चलो चलते हैं।)

(स्टेशन पर पति-पत्नी अपनी बच्ची को सी आफ करते हैं। अंजलि और कामिनी खड़ी हैं। अंजलि : यह केरल, ऊटी, दार्जिलिंग सब बहुत अच्छी जगह हैं मम्मी। पर अगली छुट्टियों में मुझे घर ही ले चलिये न। कामिनी : तुझे घर से दूर रखने में मुझे खुशी थोड़े ही होती है। मगर ! अंजलि : मगर क्या ? कामिनी इसी एक शक ने तो जिंदगी के गले में फांसी डाल रखी है लेकिन मैं वादा करती हूं एक दिन तुझे घर जरूर ले जाऊंगी। अंजलि : मम्मी अब कभी

घर चलने को नहीं कहूंगी। मुझे घर नहीं मम्मी चाहिए।

(कामिनी जा रही है। दो गुंडे उसका पीछा करते हैं) कामिनी टैक्सी में बैठती है। गुन्डा भी आकर उसी टैक्सी में बैठता है। सुल्तान : डरी भी नहीं साली। कामिनी : डरूं क्यों ? और अभी आप मुझको मार नहीं सकते, आपको मुझसे कोई काम है। (सुल्तान दादा और घबराहटलाल कामिनी से 25 प्रतिशत पर एक 'चन्दन हार' को उड़ाने का सौदा करते हैं। जो मुमताज महल लखनऊ के नवाब जाफिर अली की सगड़ दादी को दिया था और अब बैंक में है। जब भी किसी की उसके खानदान में शादी होती है तो बैंक से निकाल कर उसे पहनाया जाता है। (कामिनी आती है बेबन खड़ी हैं) कामिनी—अरी तू कब आई। कैसे बिटिया तो ठीक ठाक है न। कामिनी—मगर निकल रही है बड़ी अच्छी। बेबन—मगर अब घर ले जाओ उसको। कामिनी—कैसे ले जाऊं, क्या वह अपनी मम्मी की हकीकत झेल पाएगी वह समझती है मैं करोड़पति विधवा हूं। कई आफिसेज हैं, फैक्ट्रीज हैं, गाड़ियां हैं। रहने के लिए महल जैसा मकान है। बेबन—कभी न कभी तो उसे बताना पड़ेगा। कामिनी—क्या बताऊंगी यही कि तेरी मां नहीं। बेबन मैं उसे वह बनाऊंगी जो खुद बनना चाहती थी, इस जिन्दगी की तो परछाईं भी मैं उस पर न पड़ने दूंगी। अगर उसके डैडी जिन्दा होते तो मैं उसे गरीबी की गोद में पालती। अपनी अंजलि को तो इस चोरी की दुनिया से दूर रखा है—अगर मुझे कुछ हो जाय तो उससे न कहना। कह देना बिजनेस में घाटा हो गया और उसकी मां ने आत्महत्या कर ली। (सुलतान सिर के नकली हार बनवाने जाता है। असलम के यहां शादी हो रही है। कव्वाली होती है।

"कयामत है कि परदे में तमन्चा जान बैठी है"

(दादा कामिनी के पास आता है) कामिनी—नमस्ते दादा। दादा—कमाल है, अभी अभी पोस्टमैन आया (बेटी का खत आया, सूंघ लेती है क्या? कामिनी—मां हूं न, मेरे दिल के पास टेलीग्राम आ जाता है। दादा—दिल के पास, वहां भी पोस्ट आफिस खुल गया है क्या ?

कामिनी—यह पोस्ट आफिस तो जब से दुनिया बनी हैं तब से खुला है। दादा : अरे वाह।

(दिलावर बैठा है। आनन्द दूरबीन से देख रहा है। दिलावर : मैं यह पूछना चाह रहा हूं कि आप यह अंग्रेजी आंख लगा कर दिन रात किसे खोज रहे हैं। आनन्द : मसूर की दाल होगी दिलवर और इस वक्त मुझे बोर मत कर।

(अंजलि बैठी है आनन्द आता है) आनन्द : उस दिन हम यहां तक पहुंचे थे कि आपका नाम निराशा तो नहीं हो सकता। अब मैं गैस करूं या आप बताएंगीं। अंजलि : मैंने कहा है न मम्मी ने स्ट्रेंजर से बात करने को मना किया है। आनन्द मैं स्ट्रेंजर कहां हूं, भूल गईं लार्ड आनन्द। अंजलि : पर आप यहां कैसे आ गये। आनन्द : मैं जरा झील के उस पार था। आप दिख गई। पैदल आने में दस बारह मील का फेर पड़ता है। यह भी हो सकता था कि मैं इधर आता और पता चलता आप जा चुकी हैं। इतने में झील में छलांग मारी और यहां पहुंच गया। अंजलि : आप जाइए नहीं तो कोई देख लेगा तो मुश्किल हो जाएगी।

आनन्द आप कान्वेंट वाली हैं न; सन्त कबीर का नाम तो आपने सुना होगा। बहुत बड़े आदमी थे, कहते हैं जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी बैठ। मैं समझता हूं गहरे पानी उतरने वाला मैं मोती आप। अंजलि : जी नहीं।

(शापिंग में अंजलि का पैकेट आनन्द से बदल जाता है जब वह स्वीट ग्लूकोज सहेलियों को खिलाने के लिए खोलती है तो उसमें से बाक्सिंग का सामान निकलता हैं। सहेलियां उसका मुहम्मद अली कहकर मजाक उड़ाती हैं आनन्द पैकेट बदलने कान्वेंट में आता है मैट्रन और अंजलि में नोंक झोंक होती है।

गाना : "आपका आशिक हू मैं...

(कामिनी तोते से)

अंजलि बहुत अच्छी है। वह लड़का तो उसे पहली बार मिला है। अच्छा नाम है आनन्द। बोल तो रही हूं। जो उस दिन उसे फिर मिल गया और अंजलि बहुत खुश है। उसने खुद क्या लिखा है खुद सुन लो न (बेबन आती है) तुम्हें वह मिठ्ठू मियां से बात करते देख ले तो समझे, खुदा न करे दुश्मनों का दिमाग फिर गया है। कामिनी क्या करुं बेबन तुम थी नहीं और मेरा खुश होने को जी चाह रहा था किससे बातें करती। बेबन : अरे खुशी निखंदी कहीं भागी जा रही थी।

(लड़कियां फुटबाल खेल रही हैं। पीछे मदर बैठी है। अंजलि लेटी है। (आनन्द आता है) आनन्द : कमाल है उस दिन के बाद आप शापिंग करने निकली ही नहीं। अंजलि : आप यहां क्या कर रहे हैं। आनन्द : 'आप की राह देख रहा हूं। अंजलि : जी। आनन्द मेरा मतलब है यहां बैठे-बैठे आप से बातें कर रहा हूं। आप अकेली क्यों बैठी हैं। अंजलि : इस भीड़-भाड़ में मेरा जी नहीं लगता। आनन्द : कल डिस्को चलने का वादा करो। अंजलि : डिस्को ! अरे इम्पासिबल। मदर सुपीरियर इजाजत ही नहीं देगी। आनन्द : मैं इजाजत ले लूंगा उसे पटा लूंगा। अंजलि : यू क्रेजी, हो ही नहीं सकता। आनन्द : लगी शर्त। अंजलि लग गयी। आनन्द : तुम्हारे लोकल गार्डियन का पता नाम क्या है ?

(आनन्द दाढ़ी लगा कर अंजलि का लोकल गार्डियन बनकर कान्वेंट में मदर के पास जाता है और एक शादी में अंजलि के शामिल होने के नाम पर उस की इजाजत ले लेता है) आनन्द और अंजलि) आनन्द : मेरी पसन्द नापसन्द बहुत सादा है, औरतों में मम्मी मर्दों में डैडी और लड़कियों में तुम।

गाना : "पहली नजर में हो गया प्यार...."

अंजलि खत लिख रही है। अगले दृश्य में कामिनी खत पढ़ रही है बेबन सुन रही है। कामिनी : आपकी बहुत याद आती है, अबकी इन्तजार न करवाइयेगा। बेबन : हूं। कामिनी : अब तक आप मुझे घुमाती रही हैं, अबकी आनन्द ने कहा है, हम मम्मी को छुट्टी

घुमायेंगे (फिर रुक कर) यह आनन्द जरा ज्यादा ही होता जा रहा हैं। क्यों बेबन : बिटिया भी तो बड़ी होती जा रही है। (सुलतान व घबराहट बैठे हैं। कामिनी आती है। वह उन्हें पांच सात लाख की योजना बताती है और उसका आठवां हिस्सा मांगती है, क्योंकि ऊटी में उसे पैसों की जरूरत है और वह एक नबाब व बेगम को ठग के ऊटी पहुंचती है। सुल्तान को उसकी तलाश है।)

(आनन्द होटल में कामिनी से मिलने आता है। वह उसे बैरा समझ कर काम पे लगा देती है, बाद में जाने को कहती है नहीं जाता तो डांटती है। अंजलि : मम्मी किसे डांट रही हैं आप। एक बेवकूफ को चलता ही नहीं। आनन्द मैं-मैं। कामिनी-फिर बोला तुम? अंजलि मम्मी यह तो आनन्द है। कामिनी : आनन्द, तुमने बताया क्यों नहीं ? आनंद : आपने बताने ही कहां दिया, आते ही काम पर लगा दिया। कामिनी : आई एम सारी बेटा, बुरा मत मानना। (तीनों घुमने जाते हैं अंजलि व आनन्द के पीछे कामिनी है। अंजलि आनन्द में नौंक-झौंक होती है।

गाना : 'लो मेरा नाम नहीं तो सलाम'

(आनन्द के घर वाले अंजलि को देखने आ रहे हैं। आनन्द अंजलि को लेकर स्टेशन आता है, मां होटल में है। लडकी आनन्द के माँ-बाप को पसन्द आती है। इधर होटल में काल बैल बजने पर कामिनी दरवाजा खोलती है तो दो गुण्डे खड़े हैं।)

(अंजलि व आनन्द आते हैं। उन्हें। खत मिलता है) अंजलि डार्लिंग ! बम्बई से एक बुरी खबर आई, मुझे मजबूरन जाना पड़ रहा है। आनन्द के माता-पिता और चाचाओं से मेरी तरफ से माफी मांग लेना। मैं खुद भी उन्हें माफी का खत लिखूंगी। तुम परेशान न होना। मेरे लिए तुम्हारी खुशी से बढ़ कर कोई चीज नहीं। तुम्हारी खुशी के लिए मैं कुछ भी कर सकती हूं।

आनन्द : क्या हुआ अंजलि ? अंजलि खत आनन्द को देती है। आनन्द की मां उसके पिता के पास आती है।) मां : फिजूल की बात मत करो जी, वो हमसे बिना मिले कैसे चली गई। बाप : अरे कहा न फन्चिसियों काम हैं उनके। कोई जरूरी काम निकल आया होगा। मां : इकलौती बेटी की शादी से और जरूरी क्या हो सकता है ? उसने हमसे मिलना एवायड किया। बाप : तुम कमाल करती हो' मिलना क्यों एवायड करेगी।' मां : वही जाने मुझे तो कुछ गड़बड़ लगती है।

(सुल्तान खड़ा है। कामिनी को दो गुंडे लेकर आते हैं) सुल्तान : आ गई लल्ली। कामिनी : जी हाँ। सुल्तान : फिर भी अपनी जान को डरी नहीं। कामिनी : डरे वो जिसे अपनी जान प्यारी हो। मैं तो अपनी जान की बाजी उसी दिन हार गई थी जिस दिन आपकी दुनिया में कदम रखा था—लेकिन एक बात सुन लीजिए सुल्तान साहिब, भगवान से चाहे कोई एक बार जीत भी जाए, लेकिन बेटी के भविष्य की रक्षा करने वाली माँ से कोई नहीं जीत सकता। न आप, न भगवान। सुल्तान : यह तुम क्या बोल रही हो लल्ली। कामिनी : जी हां और बेटी भी ऐसी माँ की जिसकी तकदीर में इस एक रिश्ते के इलावा कोई रिश्ता भी नहीं। वो मां जो किसी की न बेटी है, न बहन, न बीवी। सुल्तान : तुम बैठो, अब बोल शुरू से बोल। कामिनी : शुरू का तो कुछ पता ही नहीं, पर कोई न कोई शुरू तो रहा ही होगा। मेरा अपना शुरू तो मुझे मालूम नहीं, वैसे मेरी सबसे पुरानी यादें अनाथालय की हैं। सुल्तान : यतीम खाने की। कामिनी : बच्चे को तरसते रहने के नाम जहाँ लोग खैरात भेजते हैं। अपने बच्चों का उतरन भेजते हैं। वहां हर चीज होती है, खाने के लिए गालियां, बिछाने के लिए बेबसी और रोटियों के लिए तन्हाई। फिर भी मैं रो-पीटकर जवान हो गई। हमारे यतीमखाने के मैनेजर थे द्वारका प्रसाद। बीमार थे, मेरी रात की ड्यूटी थी। तूफानी रात थी बाहर बारिश हो रही थी। (फ्लैश बैंक) द्वारका प्रसाद कामिनी को रेप करना चाहता है। कामिनी उठकर भागती हैं। द्वारका पीछा करता है। उसे धक्का देता है, वह पलंग पर गिरती है)

(कामिनी चाकू निकालती है और उसे चाकू घोंप देती है) कामिनी : मैंने घबराकर उसे चाकू मार दिया। मेरे कपड़े उसके खून से लाल हो गये और मैं भागी। बारिश मुझे प्यार से नहला रही थी। मेरे कपड़ों का खून छुड़ा रही थी एक गली से कार निकली, उसके ब्रेक अच्छे थे, नहीं तो मेरी कहानी उसी रात खत्म हो जाती। उस कार से वह उतरा मुझे लगा जैसे वह आदमी नहीं धूप का एक टुकड़ा है और मैं उस धूप में नहा गई। सुल्तान : कौन था वह, क्या नाम था उसका ? कामिनी : उसका नाम लेने से कोई फायदा नहीं। एक अजीब आदमी था। उसे सूरज बनना भी आता था और चांद बनना भी। उसका प्यार इतना बड़ा था कि मेरा दिल छोटा पड़ गया। (बेटी व कामिनी बैठी हैं। बाप भी है) बाप : अनाथालय में चलने से क्या होता है। इस पर तुम्हारा क्या बस है। यह महात्मा गांधी का देश है बेटी, यहां जात-पांत की बात करना बापू की महान आत्मा का अपमान करने के बराबर है। उसके पिता की नर्मी मुझ पर फूल बनके बरसी और मैंने सोचा दुनिया देवताओं से खाली नहीं है। वह मुझे छोड़ने आया, रास्ते में मंदिर पड़ा। वह बोला, जब विवाह धूम धाम से होगा तब होगा ही, अब तो चुप-चाप शादी कर ही लें। वहां पंडित जी ने भगवान के सामने हमारा विवाह कराया ? फिर सुहागरात आई और उस रात की सुबह वह लन्दन चला गया। तब न उसे पता था न मुझे कि अंजलि का बीज पड़ चुका हैं। कामिनी खत लिख रही है। (दरवाजे पर इंस्पेक्टर और द्वारका प्रसाद की परछाईं, दस्तक) कामिनी : आ जाओ। द्वारका : इंस्पेक्टर साहेब यही वह लडकी है जो छुरा मार कर सोच रही थी कि हाथ नहीं आयेगी। सुल्तान : लल्ली तू उस हराम के पाने यतीमखाने वाले का नाम बता दे, खुदा कसम चक्कू घसीट दूंगा उसके पेट में। कामिनी : नहीं, सुल्तान भाई चाकू न निकाले लिए, कसूर तो मेरी गरीबी और बेबसी का था। मैं अंजलि के दहेज में अपनी वही गरीबी और बेबसी नहीं देना चाहती थी और न ही अपने बचपन जैसा बचपन। सुल्तान : यह तो मैं समझूं लल्ली पर तेरे आदमी का क्या हुआ ? कामिनी : वह लन्दन से आया तो पता चला कि मैं जेल में हूं (औरतें खाना खा रही हैं। कामिनी और बेबन। बेबन : ऐ मुई तू भूखी मरना चाहती है क्या ? पेट में बच्चा

लेकर मरने चली है। तू शौक से मर उसे मारने वाली तू कौन? हिन्दुस्तान में सिर्फ तू ही नहीं, जिसके शौहर ने छोड़ दिया है, तू क्यों मरे उसके लिए। जेल में कैलाश उसे मिलने आता है। (बताता है।) कैलाश : डैडी ने ही वह सब जाल फैलाया था। वह जानते थे कि मैंने तुमसे शादी का फैसला कर लिया है, वापस लौटा तो पता चला तुम जेल में हो, लेकिन तुम्हारी बेगुनाही के सबूत के बिना कैसे आता, मैं सब समझ गया। अब आया हूं जेल की इन सलाखों को गवाह बनाकर वही बातें दोहराने। कामिनी : अब तन्हाई में तुम्हारे वादे नहीं सुनूंगी, गवाह के सामने सुनूंगी। कामिनी : मुझे तो बेटी चाहिए, बेटा हुआ तो तुमसे मिल जाएगा।

(कामिनी बताती है। रिहा हुई तो वह उसे लेने नहीं आया। उसके घर गई तो पता चला जिस कार से वह लौट रहा था, उसका एक्सीडेंट हो गया। उसके बाप ने उसे घर से निकाल दिया। कामिनी : बेबन ने मुझे सहारा दिया ओर मेरी बेबसी की कोख से अंजलि ने जन्म लिया और आपके दोनों ठग मुझे अंजलि के भविष्य की चौखट से घसीट लाए है जो अंजलि के लिए मेरी ममता का तपस्या का वरदान था। सुल्तान : बस करो लड़की। मेरा इस दुनिया में आगे-पीछे कोई नहीं, तेरी बेटी, मेरी बेटी—टेलीग्राम लल्ली। कामिनी : वह आ रहा है, चार दिन बाद बारात लेकर आ रहा है, अब क्या होगा? अगर उन्हें पता चल गया कि झूठ बोलती रही और मैं गरीब औरत हूं तो। सुल्तान : तू फिक्र न कर लल्ली।

गाना—हां औरत हूं कमजोर हूं मैं।

(सुल्तान भाई अंजलि की शादी की तैयारियां करता है। शादी धूमधाम से करने के लिये चोरियां करवाता हैं। अपने गुन्डों और शहर की तवायफों को कामिनी के रिश्तेदार बताता है कोई गुन्डा सेठ बना हुआ है, कई मिल मालिक और वेश्यायें इनकी पत्नियां। एक पारसी की बिल्डिंग पर भी धोखे से कब्जा कर लेता है बारात आती है। लेकिन पुलिस भी वहां पहुंच जाती है तो घबराहटलाल घबराहट में अंजलि के सामने सारा रहस्य खोल देता है और अंजलि को पता चल जाता है कि उसकी मां दरअसल चोर है। इधर सेठ लाकड़िया के गुन्डे भी वहाँ पहुंच जाते, क्योंकि सुल्तान भाई ने अंजलि की शादी के लिये ढ़ाई लाख रुपया जीतने के लिए लाकड़िया के घोड़े पर दाव लगाया था और लाकड़िया का घोड़ा खिंचवा दिया। इधर मार-पीट होती है। अंजलि शादी से इन्कार कर देती है।) अंजलि : मैं समझती थी कि मेरी मां ऐसी है कि मन्दिर में बिठा दो तो लोग देवी समझ कर उसकी पूजा करेंगे और आज आप चोर निकलीं। मैं जिन्दगी भर आपको माफ नहीं करूंगी। जाइए आनन्द से कहिए कि वह बारात वापस ले जाए। कामिनी : जो चाहे कह ले बेटी। अंजलि : अब कहने को रह ही क्या गया है, मुझे अपनी तरह चोर बनाइए, ताकि आपकी दुनिया के लोग आपकी तारीफ तो कर सकें कि बेटी को क्या तालीम दी हैं। अंजलि : मुहम्मद सुल्तान यह शादी नहीं होगी।

यह शादी तो होगी। हम लल्ली को जबान दिये हैं और सुन यह व्याह न हुआ तो आनन्द लल्ला की मुन्डी काट कर दरवाजे में टांग दुंगा। (आनन्द आता है) आनन्द : यह चक्कर क्या है? अंजलि : चक्कर कुछ नहीं है आज मुझे अपनी मां की हकीकत का पता चला, अभी इत्तफाक से मेरी मां बिजनेस मैंग-नेट नहीं एक चोर है। नीचे जो लोग शरीफ बने बैठे हैं, सब चोर-उच्चके हैं, दलाल हैं, बम्बई की तवायफें हैं। आनंद : तुम्हारी मम्मी चोर है दैन शीज इन गुड कम्पनी। कोई भी पेपर उठाकर देख लो किसी न किसी मिनिस्टर एम. पी. की चोरियों पर कमीशन बैठते रहते हैं। बड़े मुल्क छोटे मुल्कों की आजादी चुराते हैं। डालिंग यह तो चोरियों का युग है और न ही मैं तुम्हारी मां की चोरियों से शादी करने आया हूं। (शादी होती है) कामिनी : जो कुछ भी मेरे पास था, तुझे दे दिया जो मेरे पास नहीं था, वह भी दे दिया। अब मेरे पास आंसुओं के सिवा कुछ नहीं। यह आंसू नहीं दूंगी तुझे। इन्हें अपने लिए बचा रही हूं। जब तू बहुत याद आयेगी तो आंसुओं के बिना क्या करूंगी मैं।) कामिनी : कानून और समय बनके तो तूने अपनी मां को देख लिया, अब जाते-जाते फिर से बेटी बन जा। अब तुम्हें शायद वह मां नजर न आये जो बेबस थी, अकेली थी, पर मां थी कहे तो तेरे पांव छूकर माफी मांग लूं फिर मेरे गले लगेगी। अंजलि : मम्मी मम्मी डालिंग, मेरे हर जन्म में तुम मेरी मम्मी के रूप में मिलती रहना।

'बाबुल का गीत होता है
मैंने कितने मौसम देखे—'

(सुल्तान और उसके साथी पुलिस की गाड़ी में बैठ रहे हैं। लेकिन कामिनी मरी पड़ी है।) सुल्तान : कामिनी लल्ली जाने में इतनी जल्दी की क्या जरूरत थी।

पृष्ठ १७से आगे

सैनिक, डाकू शिब्बू को पकड़ कर बच्चन सिंह के पास ले आये। बन्दी शिब्बन अपने हम सबक मित्र बच्चन को देखकर खुशी से उछल पड़ा—'बच्चन मेरे भाई ! तू !!'

'खामोश बदकार ! जानता नहीं चौधरी **बच्चनसिंह** क्रान्तिकारी को। देश की कुर्सी के मालिक को भाई कहता है। अन्नदाता कह धूर्त ! एक डाकू होकर नेता का भाई बनता है !!' सैनिकों ! इस चाण्डाल को काल कोठरी में बन्द कर दो।'

तभी बाहर कुछ शोर हुआ। लोगों ने देखा कि कुछ सैनिक ब्रह्मचारी को घसीटते हुए ला रहे हैं। ब्रह्मचारी का शरीर घिसटने से कई जगह से फट गया था। सैनिकों ने उसे बच्चनसिंह के सामने लाकर पटक दिया—'लीजिये, सरकार, यह वही भोग ब्रह्मचारी है, जो आपकी कुर्सी तोड़ने की जुर्रत कर रहा था। यह आनंद मार्गी है इस पर धारा 302, 307 और 434 लगनी चाहिये।

'हूं ।। धारा ।।'बच्चनसिंह मुस्कराये, 'धारा क्या होती है ? काले मीसा की आपातकाल धारा के अन्तर्गत इसकी खाल उतार ली जाये।'

बस फिर क्या था। ब्रह्मचारी पर बाजने लगा ताबड़-तोड़। शिब्बन आश्चर्य से चिल्लाया—'गुरु देव घटोरन !! जीवित !! ओह ! यह क्या हो रहा है ! शिब्बन बच्चन की ओर उन्मुख हुआ—'अरे। बच्चन देख, ये अपने गुरुदेव घटोरन हैं !!'

'हा ! हा ! हा ! अरे पगले ! ये कुर्सी है ! इस पर बैठकर गुरु भी चेला लगने लगता है। कुर्सी हिलाने वाला चाहे गुरु ही क्यों न हो वह दुश्मन है। कौन घटोरन ! मैं किसी **घटोरन-बटोरन** को नहीं जानता। इस नीच ब्रह्मचारी ने मेरी कुर्सी हिलायी है। मैं इसे नहीं छोड़ूंगा।'

शिब्बन से यह सब नहीं देखा गया। उसने उछल कर बच्चन को पकड़ लिया। गुरु घटोरन भी खड़े हो गये। शिब्बन गुरुजी तथा अन्य बहुत से लोग बच्चन को कुर्सी से खींचने लगे। बच्चन हंसा और बोला—'किसने माँ का दूध पिया हैं जो मुझे कुर्सी से उतारे। अरे ! मूर्खो कुर्सी पर बैठा नेता जोंख की तरह है। जब तक खून से उसका पेट नहीं भरेगा वह कुर्सी नहीं छोड़ेगा।'

मगर घटोरन उसके गुरु थे। कड़ी मेहनत और दाव-पेच से उन्होंने जनता की सहायता से बच्चन को कुर्सी से खींच लिया। बच्चन रोने, चिल्लाने लगा—'चाहे मेरी जेल कर दो, मुझ पर आयोग बैठाओ तथा विशेष अदालतों में मुझे जी भरके घसीटो मगर ऐ दुनिया वालो !! मेरी कुर्सी न छीनो ! इस पर तो मौज ही मौज है।'

मगर जब वह होश में आया, तो वह जंगल में घटोरन गुरु के आश्रम में पड़ा हुआ था। सामने गुरुदेव और शिब्बन बैठे हुए थे। शिब्बन ने पूछा।

'गुरुदेव अब बताओ हममें से आपका प्यारा प्रथम शिष्य कौन सा है ?'

'मेरा प्यारा सर्वश्रेष्ठ शिष्य बच्चन है।' गुरु घटोरन ने बच्चन को सीने से लगा लिया।

'किस प्रकार गुरुदेव ?' शिब्बन ने पूछा।

'सुन शिब्बन, चोर, डाकू, जेब कतरे, स्मगलर तथा अन्य अपराधी सबके कुछ न कुछ नियम अवश्य होते हैं। वे चाहे कितने ही पापी क्यों न हों उनका कोई न कोई ईमान-धर्म अवश्य होता है। मगर नेता का न कोई नियम है और न कोई ईमान-धर्म होता है। किसी भी अपराधी के अन्दर कहीं न कहीं उसका मानव अवश्य छुपा होता है। वह कोई भी जघन्य अपराध करने के बाद पश्चाताप अवश्य करता है। मगर नेता में कहीं मानव नहीं छुपा होता। वह तो पत्थर की तरह निर्जीव है। वह किसी भी अपराध के लिए कभी पश्चाताप नहीं करता है। इसलिये मेरे बच्चे— घटोरन गुरु ने शिब्बन से कहा—'तू डाकू बनकर भी इतना बुरा नहीं बन सका जितना बच्चन ने बनकर दिखाया।'

शिब्बन अपना सा मुंह लेकर रह गया और इस तरह बच्चन ने बाजी जीत ली।

— **हुकम चन्द 'पक्षी'**

समाप्त

दीपावली विशेषांक (हर पृष्ठ पर नई दीवानगी लिये)

- दीवाली पर फालतू खर्च बचाने के दीवाने तरीके
- लक्ष्मी जी की माया कहीं धूप कहीं छाया
- गल गलगल बम दीवाली भप्पी लहरी स्टाइल • जूआ चक्रम
- आतिशबाजी के सामान के कुछ नये डिजाइन
- दिवालिया होने पर क्या करें ? • दो नम्बर की लक्ष्मी

और साथ ही सभी स्थाई स्तम्भ

सिलबिल-पिलपिल, फैण्टम, राजा जी, चिल्ली लीला, बन्द करो बकवास, मदहोश, बोलते अक्षर, क्यों और कैसे, गरीब चन्द की डाक, आपके पत्र, खेल-खेल में, नई फिल्म का संपूर्ण ड्रामा, वर्ग पहेली और हंसा-हंसाकर पेट में बल डाल देने वाले नये-नये चुटकुले। इनके साथ ही पढ़ने को मिलेंगी हास्य-व्यंग्य की नई-नई कहानियां और अन्य नये फीचर।

इतनी सामग्री आपको किसी अन्य एक ही पत्रिका में एक साथ नहीं मिल सकती। यही कारण है कि लाखों परवानों का दीवाना बच्चों, युवकों और बूढ़ों में एक समान लोकप्रिय है।

एजेण्ट से कह कर अपनी कापी अभी से सुरक्षित करा लीजिये।

एजेन्टों से अनुरोध ——— **अपनी बढ़ी हुई प्रतियों के लिये आज ही लिखिये.**

नये स्थानों पर एजेंसियों के लिये इस पते पर लिखें—

The Central News Agency, 4-E/4, Jhandewalan Extension, New Delhi.

बढ़े हुये पृष्ठ **मूल्य केवल २.०० रुपये**

हास्य-रचना

हमने धर्मराज का रिकार्ड जलाया !

—शिव रैना

स्कूल-कालेज के हर भविष्य-निर्माता सुनहरे मौके को गंवाकर, हम थर्ड क्लास डिग्रियां बटोरते रहे। बदे-गंदे तेज-तर्रार हथकण्डे सीखते रहे। नौकरी के योग्य न रहे, तो तस्करी, मिलावट और धोखाधड़ी की बदौलत, कारें-कोठियां खड़ी करने लगे। हमारे तीन अदद नापाक साथी अपनी ही कार, कोठियों तले, अकाल मृत्यु को प्राप्त हुये, तो हमारी छठी ज्ञानेंद्री फड़की। हमारे दिल ने चेतावनी दी, कि 'बच्चू' तुम्हारे कर्म तो दिवंगत साथियों से भी बीस-गुना अधिक घिनौने हैं। तुम्हारे लिए तो धर्मराज 'इम्पोर्टेड' जल्लाद मंगायेंगे ! हमने सुरा और सुन्दरी की मात्रा तेज कर दी; स्वयं को काफी व्यस्त रखा—मगर ध्यान हर समय नरक की ओर ही लगा रहता। हम दिन-ब-दिन दुबले होने लगे। पापों से छूटने का सरलतम उपाय सोचते रहते।

अंतर्राष्ट्रीय 'गुप्त तस्कर-सम्मेलन' में भाग लेने के बाद, हम आरामदेह विमान में, व्योमबाला के गोरे-चिट्टे शरीर को देख रहे थे, कि अच्छे-खासे विमान ने एक घातक कलाबाजी खाई। हमारे दिल ने धड़कना बन्द कर दिया। लंकापति रावण के दरबार में बंधे वीर हनुमान की तरह, हमें बांधकर यमदूत धर्मराज के सामने ले गए। सामने कर्मों के रिकार्ड-कीपर चित्रगुप्त बैठे थे। कर्मों की फाइलें सजी-सजाई एक ओर रखी थीं। धर्मराज ने गहरी निगाह से हमें घूरा। चित्रगुप्त आलमारी में से हमारी फाइल ढूंढ़ने लगे। हम थर-थर कांप रहे थे। क्षणों में क्या से क्या हो गया था ! इससे पहले कि चित्रगुप्त हमारे काले कारनामे खोजपाते, ताजा दुर्घटना के लगभग तीन सौ 'शिकार' धर्मराज के भव्य दरबार यमदूतों के साए में, प्रविष्ट हुए भगदड़-सी मच गई।

हमने मौके का पूरा लाभ उ और हम रिकार्ड वाली आलमारियों पीछे जा छुपे। जिस प्रकार मरण घायल व्यक्ति का अंतिम प्रहार होता है, हमने भी पूरी शक्ति से, के रिकार्ड पर हल्ला बोल दिया। विदेशी 'लाइटर' से, हमने तुरन्त फा को आग लगा दी ! आलमारियां धू' करके जल उठीं—परन्तु आग बु का प्रयास किसी ने न किया ! भस्म आलमारियों के पीछे, वैसी आलमारियां सुरक्षित दीखने लग इस तिलिस्म से हमें भारी आघात ल

हमारे सिर पर ठण्डा पानी तो हमारी नींद खुल गई ! ह कीमती बिस्तर आधा जल चुका था

परन्तु, यह सपना हमारा दर्शक बना। हमने तमाम काली क गरीबों में बांट दी, और अब हम में अपना 'रिकार्ड' ठीक करवा हैं !

वर्ग पहेली १० रु. इनाम जीतिये
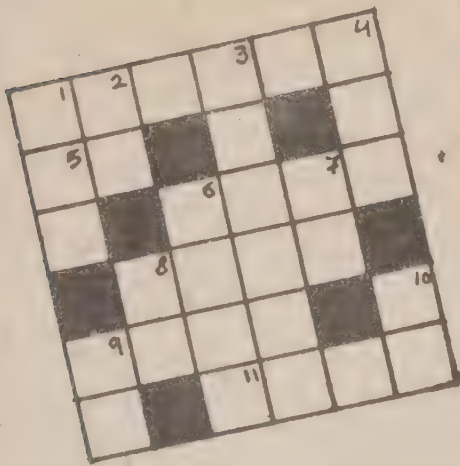
संकेत

बायें से दायें

1. सिगरेट पीने में श्रम करने पर आदमी आलसी नहीं रहता ? (6)
5. अमेठी में धार्मिक निवास स्थान ! (2)
6. इसमें फंस कर आदमी धन-दौलत जोड़ता है। (4)
8. हट के खाने के बीच न होने पर पैदा होने वाली आवाज। (4)
9. चपटे पत्थर के बाद एक और पत्थर और फिर डण्डा—इस तरह-बनी श्रृंखला। (4)
11. पाप ज्यादा न हों तो अल्हड़पन व सुन्दरता होगी। (4)

ऊपर से नीचे

1. यह बच्चा अंग्रेज महिला नहीं है ! (3)
2. इसे पकड़ने पर दूसरों की बात नहीं मानी जाती ! (2)
3. अंधेरे में दुर्ग है और दुर्ग में एक जानवर ! बस लग जाता है मुंह को। (3-
4. मछली के ऊपर शक है इन सा को ! शायर जो ठहरे। (
6. माहवारी के मध्य में न हो भौतिक नहीं होगा ! (
7. लोगों का छड़ियों के साथ प्रस्थ करना— (
8. नकली मूंछ लगाने में धोखा खा जा सकता है— (2
9. इनके पति की जै बोली जा है— (2
10. इसे लेने पर पीछे नहीं हट पड़ता ! (2

अन्तिम तिथि – १५-११-८२

नाम ————————————————

————————————————

पता ————————————————

————————————————

निःशुल्क प्रवेश

दीवाना कॅमल रंग प्रतियोगिता

पुरस्कार जीतिए

कॅमल
पहला इनाम (१) रु. ३०/-
दूसरा इनाम (३) रु. २०/-
तीसरा इनाम (१०) रु. १०/-
१० प्रमाणपत्र
दीवाना
५ आश्वासन इनाम

इस प्रतियोगिता में १२ वर्ष की उम्र तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं. ऊपर दिये हुए चित्र में पूरे तौर से कॅमल कलर्स रंग भरिए और उसे निम्नलिखित पते पर भेज दीजिये :

दीवाना, ८-बी, बहादुर शाह जाफर मार्ग, नई दिल्ली ११०००२.

जजों का निर्णय अंतिम और सभी के लिए मान्य होगा. इस विषय में कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जायेगा.

कृपया कूपन केवल अंग्रेजी में भरिए.

नाम .... उम्र ....

पता ....

....

प्रवेशिकाएं 30-12-72 से पहले भेजी जायें.

CONTEST NO.26

VISION Hin

स्वर्ण जीत सिंह रखवा, म० नं० 737, बीम वाली गली, कोर्ट रोड बिहार, 16 वर्ष ।

संदीप सचदेव, नजदीक पुराना डाकघर, कोट कपूरा, 14 वर्ष, दीवाना पढ़ना ।

सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल, 181 इस भटिला झांसी, 15 वर्ष, क्रिकेट खेलना, फिल्म देखना ।

कृष्ण मुरारी सिंह, 'राजू' द्वारा चन्द्रपाल सिंह, 115/2 विजय नगर, ... नपुर, 16 वर्ष ।

सुरेन्द्र खन्ना, म. नं. 452ए/3, महरौली, 16 वर्ष, पिक्चर देखना, दोस्ती करना ।

विकास कुमार अनेजा, एक्स/621 रघुवरपुरा, मकान नं० 1 गांधी नगर, 17 वर्ष ।

गुरदीप सिंह, 9/2 ... नगर, चौक लखनऊ, 16 ... दीवाना पढ़ना, पत्र लिखना

विनोद इमदा, 576, बैंक रोड मगनमर, 23 वर्ष, तार भेजना, कविता लिखना ।

नरेश कुमार, स्टूडियो नरेश मालवीय नगर, नई दिल्ली-17, 18 वर्ष, दीवाना पढ़ना ।

एस. एम. खान, 40/50, हसैन गंज, लखनऊ, 21 वर्ष, फिल्म देखना, पत्र लिखना ।

देवेन्द्र कुमार, मालवीय नगर, नई दिल्ली 17, 14 वर्ष, पत्र लिखना, नावल पढ़ना ।

चन्द्रपाल विडलान, डबल स्टोरी, फ्रिबी प्लेस, दिल्ली कैंट 10, 18 वर्ष ।

अमरजीत सिंह, मकान नं. 334, शेरपुरा रोड, रेलवे फाटक जगराओं, 19 वर्ष, पत्र-मित्रता

रामफल सिंह, क्वाटर 357/5-3 (बी.), बी. एल. कालोनी, सुन्दर नगर

मो० रजाज उद्दीन आजाद, आजाद मंजिले, भोगलपुरा दुरुखी, पटना सिटी, 24 वर्ष ।

केशव कुमार, प्रकाश भवन बंगाली तेला, समस्तीपुर, 11 वर्ष, दीवाना पढ़ना ।

सुरिन्द्र खुराना, मकान नं० 126 डी. नई मण्डी, सिरसा, 14 वर्ष, दीवाना पढ़ना ।

जनार्दन पंडित, रिता घड़ी दुकान, जी. एस. रोड, पलटन बाजार गोहाटी, 21 वर्ष ।

निर्मल मान्धर, 7/556 मरु टोल काठमांडो, नेपाल, 17 वर्ष, पत्र-मित्रता ।

ब्रजेश बंसल, पत्थर बालान, मेरठ यू. पी., 19 वर्ष, तार, भेजना, फिल्म देखना ।

अशोक जैन, 13 बी. ... दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता, 18 दोस्ती करना ।

संजय कुमार अग्र 'पराग', 350 आलम गिरिहोज, बरेली, 16 वर्ष, शायरी, पत्र मित्रता ।

महेन्द्र सिंह कम्बौलिया, 40 श्री बी. के. शर्मा, नवाब का कुआं, सिन्दे की छावनी, लश्कर ।

सत्य दयाल शास्त्री, एम. ए. द्वारा सर्वोदय साहित्य भण्डार, रेलवे स्टेशन, अजमेर (राज.) ।

नरेन्द्र कुमार तीबनीवाला, म० नं० 2108 गणगौरी, बाजार जयपुर, 20 वर्ष ।

विजय कुमार राजपूत, 260, खालसा स्ट्रीट, काशीपुर (नैनीताल), 22 वर्ष ।

संजय सिंह 'विसेन', चिरैया रोड, खां मंह, रोड न० 1, पढ़ना, 14 वर्ष, ताश खेलना ।

राकेश कुमार छाबड़ा, के. हकीकत नगर, सहारनपुर 17 वर्ष, क्रिकेट खेलना ।

भूपेन्द्र कुशवाह, मालवा मिल इन्दौर म. प्र., 17 वर्ष, विदेश में नौकरी करना ।

आबिद हुसेन, भवानी साईकिल वर्क्स मनावर, 20 वर्ष, पत्र लिखना, डाक भेजना ।

राजेश कुमार वर्मा, कनक मंडी जम्मू, 15 वर्ष, फरमाईश भेजना, दीवाना पढ़ना ।

मुकेश कुमार 'मासूम' 1147 कमेटी बाजार, होशियारपुर (पंजाब), 18 वर्ष ।

तरसेम मित्तल डी. सी. पुरानी धान मण्डी, पीलीबंगा, 19 वर्ष, फरमाईश भेजना ।

'प्रिंस' दीवान सिंह, ब्लाक एल. 88/बी., पुरानी रेलवे कालोनी, लालगढ़, बीकानेर ।

मो० याकूब खान की 278 ख्वाजीपीर उदय (राज०), 20 वर्ष ।

ऋजुवेद नन्दा, जे./1515 जहांगीर पुरी, दिल्ली, 23 वर्ष, कसरत करना, पत्र लिखना ।

फैयाज अली जाकू, मौहल्ला जमीन्दारान सीकर, (राजस्थान), 16 वर्ष, बातें करना ।

सुनील कुमार सक्सेना, ब्राइजई ।। निकट ओवर शाहजहांपुर, (उ. प्र.) ।

मो० सिद्धेश्वर सिंह 'सुमन' ब्रिज ओ. फोन्स (1) धनबाद, 16 वर्ष, तार भेजना ।

एम. डी. जे. के. रोमू 'टीटू' स्वास्तीक धनसार आयल मिल, बहादुरगढ़ पटियाला, 17 वर्ष पत्र लिखना ।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रेंड्स क्लब,
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम --

पता --

आयु ---------------- शौक ----------------

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता

दीवाना चिपकी

इस गली में कुत्ते नहीं हैं

आपको जो कुत्ते नजर आ रहे हैं वे वास्तव में यहां के चूहे हैं जो अपनी गली में कुत्ते बने फिर रहे हैं।

दीवाना

R.N. 16596/65 Regd. No. D-(C)1020/82

जीवन और हनु आश्चर्य चकित

अद्भुत रहस्य-पक्षी देशान्तरण

सर्दियां आती है तो करोड़ो पक्षी दाने और गर्म ऋतु की तलाश में दूर-दूर की उड़ाने भरते हैं— और गर्मियां आने पर उसी रास्ते वापस लौट आते हैं। यही पक्षियों का **देशान्तरण** (प्रवास) कहलाता है।

1 ARCTIC TERN

उत्तरीय ध्रुव के कुररी (टर्न) अपना घोंसला उत्तरी ध्रुव के पास ही बनाते हैं। सर्दियों में, उनके झुंड के **झुंड** 11,000 मील उड़कर दक्षिणी ध्रुव चले जाते हैं— इतनी दूर शायद ही कोई और जाता हो।

गोल्डन प्लोवर अलास्का से हवाई तक 2,050 मील की दूरी तय करता है जिसमें उसे 35 घंटे लगते हैं और 2,50,000 बार पंख फड़फड़ाने पड़ते हैं।

देहरादून के पास कुछ हंस बहुत ही अधिक ऊंचाई पर देखे गये हैं। उनकी अधिकतम ऊंचाई 29,500 फीट रिकार्ड की गई है।

2 SNOW GOOSE

पक्षियों का दिशा ज्ञान अद्भुत होता है। किसी मैंक्स शीयरवाटर पक्षी को यदि अमरीका ले जाकर छोड़ दिया

जाय तो वह सीधा अटलांटिक सागर को पार करता हुआ 12 घंटे में ही ब्रिटेन के अपने घोंसले में पहुंच जायेगा। यहां तक कि नवजात मैंक्स शीयरवाटर भी 8,000 मील

3 HUMMINGBIRD

उड़ता हुआ अटलांटिक सागर पार कर लेगा और ट्रिस्टान डा क्युन्हा के छोटे से टापू में ठीक अपने घोंसले पर जाकर बैठ जायेगा।

किस जगह सूरज होने पर दिन का कौन सा समय होता है, इसे ध्यान में रख कर पक्षी जान जाते हैं कि वह कहां हैं और उन्हें कहां जाना है। अपने सहज ज्ञान से ही वह समय का ऐसे पता चला लेते हैं जैसे उनके पास घड़ी ही हो।

रात में वह आकाश को नक्शे के रूप में इस्तेमाल करते हैं। सुपरिचित तारों के समूह उनके लिए निशानी का काम करते हैं और वह सही दिशा पकड़ लेते हैं।

किसी कम्पास की तरह हो

4 SANDHILL CRANE

सकता है कुछ पक्षी पृथ्वी के चुम्बकीय और गुरुत्व क्षेत्रों के प्रति संवेदी हों।

वे उड़ते समय नीचे सतह की जानी-पहचानी निशानियों की तलाश में भी रहते हैं जैसे किनारे से लहरों के टकराने का शोर... जो मानव कान के लिए बहुत ही हल्का और अस्पष्ट हो सकता है।

इन सभी विशेषताओं के कारण ही इतना निश्चित रहता है कि जमीन हो या समुद्र-पक्षी अपना रास्ता कभी नहीं भूलेगा।

5 SHEARWATER
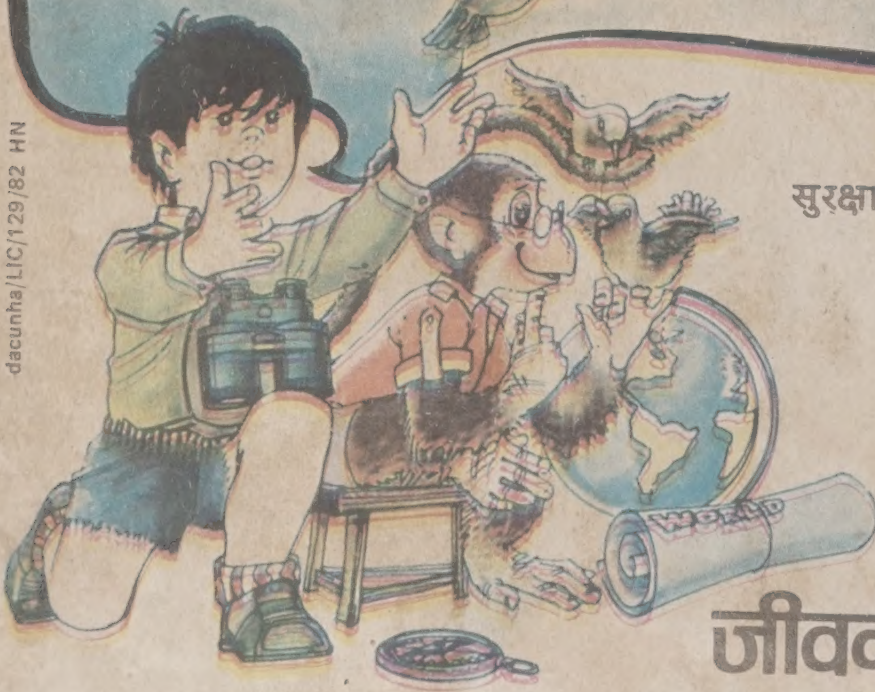
जीवन बीमा—आपके भविष्य की सुरक्षा का सबसे सुरक्षित उपाय. इसके बारे में अधिक जानिए.

भारतीय जीवन बीमा निगम